।। ओ३म् ।।

COMPUTERISED

विजयेश्वर दैनन्दिनी

प्रवर्तक
स्व. ज्यो. आप्ताभ शर्मा

संस्थापक
स्व. काशीनाथ ज्योतिषी

।।ओ३म्।।

सप्तर्षि सं. 5087

विक्रमी सं. 2068

विजयेश्वर

विजयेश्वर गणित सं. 229

दैनन्दिनी

ईस्वी सं. 2011-12

सम्पादक
डॉ. मनमोहन ज्योतिषी

गणित कर्ता
पुनीत ज्योतिषी

प्रकाशक
सुनीत ज्योतिषी

विजयेश्वर दैनन्दिनी
VIJAYSHVAR DIARY

सप्तर्षि सम्वत् 5087 विक्रमी सम्वत् 2068

ईस्वी सम्वत् 2011-12

प्रकाशक :- डॉ० मनमोहन ज्योतिषी

नामः- ....

गौत्रः- .... व्यवसायः- ....

घर का पताः- ....

....................................दूरभाष.......................

चैत्र शुक्ल पक्ष

4 अप्रैल की ग्रह स्थिति :- मीन में सूर्य, भौम, बुध (वक्री),शुक्र; मिथुन में केतू; कन्या में शनि (वक्री); धनु में राहु; कुम्भ में शुक्र।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

दिन मान	चैत्र	अप्रे	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
31 24	22	4	सोम	प्रति प्र	10-23PM	रेव दि	5-15PM	मतंग:, नवरेह, नवरात्रारम्भ, 5:15 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त, नववर्ष विक्रमी 2068 आरम्भ।	6:16	6:52
24	23	5	भौम	द्विती प्र	12-35AM	अश्विप्र	7-59PM	अमृत्म्।	6:14	6:53
25	24	6	बुध	तृती प्र	2-31AM	भरण प्र	10-30PM	काण्ड: जंगत्रय, यज्ञ शिव मन्दिर पुरुखू, हरी पर्वत श्रीनगर, देवी आंगन पलौड़ा, 5:05 रात वृष में चन्द।	6:13	6:54
27	25	7	गुरु	चतु प्र	4-08AM	कृति प्र	12-43AM	अलापकम्।	6:12	6:54
33	26	8	शुक्र	पंच प्र	5-18AM	रोहि प्र	2-32AM	मैत्रम्, महात्मा काशीनाथ कौल जयन्ती, त्रिलोकपुरा गोल गुजराल, जम्मू।	6:11	6:55
38	27	9	शनि	षष्ठी प्र	5-54AM	मृग प्र	3-49AM	वज्रम्, कुमार षष्ठी, 3:14 दिन मिथुन में चन्द्र।	6: 9	6:56
45	28	10	रवि	सप्त प्र	5-52AM	आर्दा प्र	4-28AM	ध्वांक्ष:।	6: 8	6:56
48	29	11	सोम	अष्ट प्र	5-07AM	पुन प्र	4-27AM	धौम्य:, दुर्गाष्टमी, यज्ञ दुर्गानाग श्रीनगर व नागड़ढी अछवल, 10:31 रात कर्क में चन्द्र	6: 7	6:57

53	30	12	भौम	नवम प्र	3-39AM	तिष्या प्र	3-42 AM	प्रवर्धः रामनवमी, यज्ञ मंगला भगवती वची पुलवापा, उमानगरी व शैल पुत्री, चक्रेश्वर यात्रा, शिवा भगवती जयन्ती अकिनगांव।	6:6	6:58
32 00	31	13	बुध	दश प्र	1-28AM	अश्ले प्र	2-15 AM	क्षयः, मासान्त, 2:15 रात सिंह में चन्द्र।	6:4	6:58
05	वैशा	14	गुरु	एका प्र	10-41PM	मघा प्र	12-12 AM	गजः, कामदा एकादशी, संक्रान्ति व्रत, 1:00 दिन में मेष में सूर्य, वैशाखी।	6:3	6:59
10	2	15	शुक्र	द्वाद प्र	7-24PM	पू.फा. प्र	9-41 PM	सिद्धः, 2:59 रात कन्या में चन्द्र।	6:2	7:00
15	3	16	शनि	त्रयो दि	3-47PM	उ.फा.दि	6-50 PM	उन्मूलं, 10:50 दिन मीन में शुक्र, श्री रूप जी मस्ताना जयन्ती चिनौर आश्रम।	6:1	7:01
20	4	17	रवि	चर्तु दि	11-59AM	हस्त दि	3-50 PM	मानसम, श्री महावीर जयन्ती (जैन), 2-21 रात तुला में चन्द्र।	6:0	7:01
25	5	18	सोम	पूर्णि दि	8-14AM	चित्र दि	12-54 PM	मुद्गरम्, श्री हनुमान जयन्ती, त्रयहः (प्रति प्र 4-40), प्रतिपदा तिथि का क्षय, पोखरीवल, वन तालाव यज्ञ।	5:59	7:2

श्राद्ध :- प्रतिपदा से त्रयोदशी तक अपने दिन चतुर्दशी व पूर्णिमा के पहले दिन।

मध्याह्न:- प्रतिपदा से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी व पूर्णिमा का पहले दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- पत्नी पति के वाम भाग (बायीं ओर) कब कब बैठती है?

सिन्दूर दान, द्विरागमन, भोजन, शयन और सेवा के समय, अभिषेक तथा ब्राह्मणें के पाँव धोते समय पत्नी को बायीं ओर रहना चाहिए। कन्यादान, विवाह, यज्ञकर्म एवं जातकर्म, नामकरण, तथा अन्न प्राशन के शुभ अवसर पर पत्नी को पति के दाहिनी ओर बैठना चाहिए। जो कर्म स्त्री प्रधान हैं अथवा जो कर्म इह लौकिक होते हैं। उसमें पत्नी पुरुष के बायें ओर बैठती है। जैसे माँग में सिन्दूर भरना, सेवा, शयन आदि। परन्तु यज्ञादि, कन्यादान, विवाह ये सभी कार्य पुरुष प्रधान हैं। इसमें पत्नी दायीं ओर बैठती है।

वैशाख कृष्ण पक्ष

19 अप्रैल की ग्रह स्थिति :- मेष में सूर्य; मिथुन में केतू; कन्या में में शनि (वक्री); धनु में राहु; मीन में भौम, बुध, गुरु, शुक्र।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

दिन मान	वैश	अप्रे	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वसन्त ऋतु, उत्तरायण।		
32 30	6	19	भौम	द्विती	प्र	1-29AM	स्वात	दि	10-13 AM	ध्वज:, 2-28 रात वृश्चिक में चन्द्र।	5:57	7: 3
35	7	20	बुध	तृती	प्र	10-50PM	विशा	दि	7-57 AM	प्रजापत्य:।	5:56	7: 3
40	8	21	गुरु	चतु	प्र	8-52PM	अनु	दि	6-16 AM	आनन्द:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 10:55 रात, 5-19 रात धनु में चन्द्र व मूल शुरू।	5:55	7: 4
45	9	22	शुक्र	पंच	प्र	7-41PM	मूल	प्र	5-09 AM	स्थिर:, श्री पंचमी, कमला यात्रा, श्री मंगलेश्वर भैरव जयन्ती।	5:54	7: 5
50	10	23	शनि	षष्ठी	प्र	7-19PM	पू.षा.	प्र	5-48 AM	मातंग:, वैताल षष्ठी, श्री ऋषिपीर श्राद्ध।	5:53	7: 6
50	11	24	रवि	सप्त	प्र	7-46PM	उ.षा.		दिन रात	अमृतम्, 12-05 दिन मकर में चन्द्र।	5:52	7: 6
53	12	25	सोम	अष्ट	प्र	8-57PM	उ.षा.	दि	7-13 AM	मृत्यु:।	5:51	7: 7
58	13	26	भौम	नवम	प्र	10-44PM	श्रवण	दि	9-17 AM	अलापकम्, 10-30 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	5:49	7: 8

33 03	14	27	बुध	दश प्र	12-55AM	धनि दि	11-50 AM	मैत्रम्, बुलबुल लेंकर यज्ञ, गुरु उदय।	5:48	7: 9
07	15	28	गुरु	एका प्र	3-20AM	शत दि	2-42 PM	वज्रम, वरुथनी एकादशी।	5:47	7: 9
10	16	29	शुक्र	द्वाद प्र	5-45AM	पू.भा. दि	5-42 PM	ध्वांक्ष:, स्व. लक्ष्मण जी जयन्ती, ईशवर निशात श्रीनगर, महेन्द्र नगर, सरिता विहार दिल्ली, 10-56 दिन मीन में चन्द्र।	5:46	7:10
15	17	30	शनि	त्रयो	दिन रात	उ.भा. प्र	8-40 PM	धौम्य:, अधिक दिन, ।	5:45	7:11
20	18	मई 1	रवि	त्रयो दि	8-12AM	रेव प्र	11-30 PM	प्रवर्य:, 11-30 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	5:44	7:12
23	19	2	सोम	चर्तु दि	10-24AM	अश्वि प्र	2-07 AM	क्षय:।	5:43	7:12
27	20	3	भौम	अमा दि	12-21PM	भरण प्र	4-27 AM	गज:, 7-45 प्रात: वृश्चिक में राहु व वृष में केतु।	5:42	7:13

श्राद्ध :- प्रतिपदा का पहले दिन द्वितीया से त्रयोदशी तक अपने दिन चतुर्दशी व अमावसी तक पहले दिन

मध्याह्न:- प्रतिपदा का पहले दिन द्वितीया से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी पहले दिन व अमावस्या का अपने दिन

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- <u>माला फेरने का वैज्ञानिक आधार।</u> माला फेरते समय अँगूठे और उंगली के मध्य घर्षण (Friction) से एक प्रकार की विद्युत उत्पन्न होती है जो धमनियों द्वारा होकर हृदय चक्र को प्रभावित करती है जिससे चंचल मन स्थिर हो जाता है। माला फेरते समय केवल अंगूठे के साथ मध्यमा अंगुली का प्रयोग करते हैं। वैज्ञानिक मतानुसार भी 'अक्यू ' प्रेशर द्वारा इलाज' एसी विद्या है जो शरीर की विभिन्न नसों से इलाज करने की पद्धति है। विद्वानों ने मानव नसों का विधिवत अध्ययन करने के उपरान्त इस विद्या का नाम 'एक्यूप्रेशर' रखा। दोनों हाथ की हथेलीयों के विभिन्न भागों को दबा-दबाकर शरीर के अन्य भागों का इलाज इस विद्या के अन्तर्गत किया जाता है। मध्यमा अंगुली की नस का सम्बन्ध हृदय से होता है। इसीलिए माला जपते समय मध्यमा अंगुली का प्रयोग होता हैं।

वैशाख शुक्ल पक्ष

4 मई की ग्रह स्थिति :- मेष में सूर्य, भौम; वृष में केतू; कन्या में शनि (वक्री); वृश्चिक में राहु; मीन में शुक्र, बुध, गुरु।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

दिन मान	वैश	मई	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
33 33	21	4	बुध	प्रति दि	1-58PM	कृति	दिन रात	सिद्ध:, 10:59 दिन वृष में चन्द्र, श्री शकर साहिब यज्ञ, मुंछी चक जम्मू।	5:41	7:14
28	22	5	गुरु	द्विती दि	3-15PM	कृति दि	6-27 AM	अलापकम्, स्वामी कुमार जी महाराज जयन्ती गीता सत्संग आश्रम मुट्ठी जम्मू।	5:40	7:15
35	23	6	शुक्र	तृती दि	4-07PM	रोहि दि	8-05 AM	मैत्रम्, अक्षय तृतीय, श्री योगिराज स्वा. धर्मदत्त जी निर्वाण दिवस, परशुराम जी जयन्ती, 8-45 रात मिथुन में चन्द्र।	5:40	7:15
38	24	7	शनि	चतु दि	4-34PM	मृग दि	9-19 AM	वज्रम्।	5:39	7:16
36	25	8	रवि	पंच दि	4-30PM	आर्द्रा दि	10-05 AM	ध्वांक्ष:, आद्यगुरु शंकराचार्य जयन्ती, कुमार षष्ठी, 4-19 रात कर्क में चन्द्र, 2-14 दिन मेष में गुरु।	5:38	7:17
40	26	9	सोम	षष्ठी दि	3-56PM	पुन दि	10-20 AM	धौम्य:।	5:37	7:18
43	27	10	भौम	सप्त दि	2-49PM	तिष्या दि	10-04 AM	प्रवर्ध:, श्री गंगा जयन्ती।	5:36	7:18
48	28	11	बुध	अष्ट दि	1-09PM	अश्ले दि	9-05 AM	क्षय: 9:05 दिन सिंह में चन्द्र, 8:45 प्रात: मेष में बुध, 5:24 प्रात: मेष में शुक्र।	5:35	7:19

50	29	12	गुरु	नवम दि	10-59AM	मघा दि	7-55 AM	गजः।	5:34	7:20
53	30	13	शुक्र	दश दि	8-22AM	पू.फा.दि	6-08 AM	सिद्धः, त्रयहः (एका प्र 5:24), नारद काह, डुमटवल यात्रा, 11:38 दिन कन्या में चन्द्र, स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ गोसाई गुण्ड।	5:34	7:20
58	31	14	शनि	द्वाद प्र	2-12AM	हस्त प्र	1-37 AM	मृत्युः, मासान्त।	5:33	7:21
34 00	ज्येष्ठ	15	रवि	त्रयो प्र	10-54PM	चित्र प्र	11-08 PM	काम्यः, संक्रान्ति व्रत, 12:23 दिन तुला में चन्द्र, 9:50 प्रातः वृष में सूर्य।	5:32	7:22
05	2	16	सोम	चर्तु प्र	7-40PM	स्वात प्र	8-43 PM	छत्रम्, श्री नरसिंह चुदाह, गणेश चतुर्दशी, गवपथयार व गणेशवल पहलगांव यात्रा।	5:32	7:23
08	3	17	भौम	पूर्णि दि	4-39PM	विशा दि	6-30 PM	श्रीवत्सः श्री बुद्ध जयन्ती, 1-02 दिन वृश्चिक में चन्द्र, 2-48 दिन मेष में भौम।	5:31	7:23

श्राद्ध :- प्रतिपदा से एकादशी तक पहले दिन द्वादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्न:- प्रतिपदा से अष्टमी तक अपने दिन नवमी से एकादशी तक पहले दिन द्वादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- देवी देवताओं की मूर्तियों की लोग परिक्रमा क्यों करते हैं? देव मूर्तियों की परिक्रमा करना अत्यन्त फलदायक माना गया है। धर्मशास्त्रों के अनुसार जहाँ पर देवी या देवता की प्राण प्रतिष्ठत मूर्ति स्थापित होती है उस स्थान के मध्य से कुछ दूरी तक उस शक्ति स्वरूप की दिव्यप्रभा विद्यमान रहती है। उस देव शक्ति के ज्योतिमंडल से निकलने वाले तेज को हम परिक्रमा करके प्राप्त करते हैं। मूर्ति की परिक्रमा सदैव दाहिनी ओर से करनी चाहिए। उल्टी दिशा में परिक्रमा करने से दैवी शक्ति के ज्योतिमंडल की गति और हमारे अन्दर स्थित परमाणुओं में टकराव पैदा होने से हमारा तेज नष्ट हो जाता है। शस्त्रों में कुछ देवी देवताओं की निश्चित परिक्रमा का विधान है भगवान श्री कृष्ण की तीन, देवी की एक व भगवान शंकर की आधी प्रिक्रमा करनी चाहिए। भगवान् शंकर की परिक्रमा करते हुए अभिषेक किये गये जल की धार को लाँघना वर्जित माना गया है।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- हम आचमन क्यों करते हैं? कण्ठ शोधन के लिए आचमन किया जाता है। आचमन करने से कफ आदि की सफाई हो जाती है और श्वास क्रिया में तथा मंत्रों के उच्चारण में सहायता मिलती है। अन्यथा कफ आदि के कारण मंत्रोच्चारण में त्रुटि हो सकती है। तीन बार आचमन करने से कायिक, मानसिक और वाचिक त्रिविध पापों की निवृत्ति होती है।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

18 मई की ग्रह स्थिति:- वृष में सूर्य, केतू; कन्या में शनि (वक्री); वृश्चिक में राहु; मेष में भौम, बुध, गुरु, शुक्र।

सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

दिन मान	ज्ये	मई	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
34 13	4	18	बुध	प्रति	दि	1-59PM	अनु	दि	4-41 PM	सौम्य:, श्री काकजी यज्ञ हांगलगुण्ड /नगरोटा जम्मू।	5:30	7:24
15	5	19	गुरु	द्विती	दि	11-49AM	ज्येष्ठ	दि	3-23 PM	कालदण्ड:,नारद जयन्ती, 3:23 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	5:30	7:25
20	6	20	शुक्र	तृती	दि	10-17AM	मूल	दि	2-43 PM	स्थिर:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:27 रात)।	5:29	7:25
23	7	21	शनि	चतु	दि	9-28AM	पू.षा.	दि	2-47 PM	मातंग:, 8-54 रात मकर में चन्द्र।	5:28	7:26
25	8	22	रवि	पंच	दि	9-25AM	उ.षा.	दि	3-35 PM	अमृतम्, ज्येष्ठा देवी महायज्ञ, ज्योठयार यात्रा, स्वा. गोविन्द कौल जलाली जयन्ती त्रिलोकपुर।	5:28	7:27
28	9	23	सोम	षष्ठी	दि	10-07AM	श्रवण	दि	5-06 PM	सिद्ध:, विजेश्वर निवासी ज्यो. काशीनाथ शर्मा अन्तर्ध्यान दिवस	5:27	7:27
30	10	24	भौम	सप्त	दि	11-28AM	धनि	दि	7-15 PM	उन्मूलम्, 6-07 प्रात: कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	5:27	7:28
33	11	25	बुध	अष्ट	दि	1-22PM	शत	प्र	9-52 PM	मानसम्, स्वा. शंकर राज़दान यज्ञ (छज़बल)।	5:26	7:29

35	12	**26**	गुरु	नवम दि	3-38PM	पू.भा.प्र	12-45AM	मुद्गरम्, 6-01 शां मीनं में चन्द्र।	5:26	7:29
38	13	**27**	शुक्र	दश दि	6-01PM	उ.भा.प्र	3-43AM	ध्वजः।	5:25	7:30
43	14	**28**	शनि	एका प्र	8-22PM	रेव	दिन रात	प्रजापत्यः, रथा एकादशी, भद्रकाली जयन्ती।	5:25	7:31
45	15	**29**	रवि	द्वाद प्र	10-30PM	रेव दि	6-34AM	प्रवर्धः, 6-34 प्रातः मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	5:25	7:31
45	16	**30**	सोम	त्रयो प्र	12-17AM	अश्विदि	9-09AM	क्षयः, 12-06 रात वृष में बुध।	5:24	7:32
48	17	**31**	भौम	चर्तु प्र	1-39AM	भरण दि	11-22AM	गजः, 5-32 शां वृश्चिक में चन्द्र।	5:24	7:33
58	18	जून	बुध	अमा प्र	2-33AM	कृति दि	1-10PM	सिद्धः, हरिश्वर यात्रा खनुमुह, श्री नन्दकेश्वर यज्ञ, सीरजागीर, गोल गुजराल, अकलपुरा।	5:24	7:33

श्राद्ध :- प्रतिपदा से दशमी तक पहले दिन एकादशी से अमावसी तक अपने दिन

मध्याह्न:- प्रतिपदा का अपने दिन द्वितीया से सप्तम तक पहले दिन अष्टमी से अमावस्या तक अपने दिन

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- यज्ञोपवीत' शब्द का क्या अर्थ है? यज्ञ + उपवीत = यज्ञोपवीत, अर्थात् जिसे यज्ञ करने का पूर्ण रूप से अधिकार प्राप्त हो
जाये। यज्ञोपवीत धारण किये बिना किसी को गायत्री जप अथवा वेद पाठ का अधिकार प्राप्त नहीं होता। इसके पहनने से व्यक्ति ब्रह्म (जिसे ईश्वर, परमात्मा आदि अनेकों
नाम से सम्बोधित करते हैं) के प्रति समर्पित हो जाता है अर्थात् ब्रह्म सूत्र धारण करने के उपरान्त उस व्यक्ति को विशेष नियम आचारणों का पालन करना अनिवार्य हो जाता
है। जनेऊ दो प्रकार के होते हैं- तीन धागे वाले अथवा छः धागे वाले। ब्रह्मचारी के लिए तीन धागे वाले जनेऊ का विधान है, विवाहित पुरुष को छः धागे वाला जनेऊ
धारण करते हैं। धार्मिक व्याख्या के अतिरिक्त यज्ञोपवीत के तीन सूत्रों में प्रथम सूत्र संयमित जीवन, दूसरा सूत्र माता के प्रति कर्तव्य की भावना और तीसरा सूत्र पिता के
प्रति कर्तव्य की भावना का बोधक है। छः सूत्रों वाले यज्ञोपवीत में चौथे, पाचवें व छटे सूत्र का पत्नी, सासू व श्वसुर के प्रति कर्तव्य पालन का स्मरण करता है।

ज्येष्ट शुक्ल पक्ष

2 जून की ग्रह स्थिति:- वृष में सूर्य, बुध, केतू; कन्या में शनि (वक्री); वृश्चिक में राहु; मेष में भौम, गुरु, शुक्र।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

दिन मान	ज्ये	जून	वार	तिथि		समाप्ति काल	नक्षत्र		समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण।	सू उ	सू अ
35 03	19	2	गुरु	प्रति	प्र	2-58AM	रोहि	दि	2-30 PM	उन्मूलं, श्री मान भट मान जयन्ती (फतेहपुर निवासी), 3-00 रात मिथुन में चन्द्र।	5:23	7:34
03	20	3	शुक्र	द्विती	प्र	2-56AM	मृग	दि	3-23 PM	मानसम्, भगवान श्री गोपीनाथ जी यज्ञ, वोड़ी, दिल्ली, मुम्बई, स्वा. क्षेमराज जी जयन्ती।	5:23	7:34
03	21	4	शनि	तृती	प्र	2-28AM	आर्द्रा	दि	3-49 PM	मुद्गरम्, 10-01 रात वृष में शुक्र।	5:23	7:35
03	22	5	रवि	चतु	प्र	1-34AM	पुन	दि	3-50 PM	ध्वज: 9-52 प्रात: कर्क में चन्द्र, ब्रह्मचारी श्री गोपीनाथ जयन्ती गौरीपुरा।	5:23	7:35
03	23	6	सोम	पंच	प्र	12-18AM	तिष्या	दि	3-28 PM	प्रजापत्य:, श्री रघुनाथ जी कुकिलू जयन्ती।	5:23	7:36
03	24	7	भौम	षष्ठी	प्र	10-41PM	अश्ले	दि	2-44 PM	आनन्द:, कुमार षष्ठी व्रत, 2-44 दिन सिंह में चन्द्र।	5:22	7:36
07	25	8	बुध	सप्त	प्र	8-45PM	मघा	दि	1-40 PM	चर:।	5:22	7:37

07	26	9	गुरु	अष्ट दि	6-33PM	पू.फा. दि	12-19 PM	मुसुलं, ज्येष्ठ अष्टमी, क्षीर भवानी यात्रा, 5-57 शां कन्या में चन्द्र, मंजगांव, खनबरथ, लकटीपुर यात्रा।	5:22	7:37
10	27	10	शुक्र	नवम दि	4-08PM	उ.फा.दि	10-45 AM	शूलम्। B में सूर्य स्वा. महादेव काक जी जयन्ती।	5:22	7:38
10	28	11	शनि	दश दि	1-34PM	हस्त दि	9-01 AM	मृत्युः, 8-07 रात तुला में चन्द्र।	5:22	7:38
10	29	12	रवि	एका दि	10-56AM	चित्र दि	7-12 AM	काम्यः, निर्जला एकादशी, 12-55 रात वृष में भौम, श्री नीलकण्ठ जयन्ती श्रीनगर।	5:22	7:39
10	30	13	सोम	द्वाद दि	8-20AM	स्वात दि	5-23 AM	छत्रम्, 10-06 रात वृश्चिक में चन्द्र।	5:22	7:39
10	31	14	भौम	त्रयो दि	5-52AM	अनु प्र	2-13 AM	वज्रम्, त्रयह : (चर्तु प्र 3-37), मासान्त, वटसावत्री व्रत, 6-56 प्रातः मिथुन में बुध।	5:22	7:39
13	आषा	15	बुध	पूर्णि प्र	1-44AM	ज्येष्ठ प्र	1-05 AM	ध्वांक्षः, चन्द ग्रहण, संक्रान्ति व्रत, माता रूपभवानी जयन्ती, कबीर जयन्ती, 1-05 रात धनु में चन्द्र व मूल शुरू, 4-26 दिन मिथुन B	5:22	7:40

श्राद्ध :- प्रतिपदा से अष्टमी तक अपने दिन नवमी से चतुर्दशी तक पहले दिन पूर्णिमा का अपने दिन।

मध्याह्न:- प्रतिपदा से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से चतुर्दशी तक पहले दिन पूर्णिमा का अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- 'शुचि' का क्या अर्थ है ? धार्मिक दृष्टि से शुचि का अर्थ पवित्रता से है। अपवित्र वस्तु को अशुचि कहते है। अन्त: करण की पवित्रता का अर्थ शुचिता से है जब कि बाह्य जगत की वस्तु को स्वच्छता से तुलना करते है। यहाँ कहने का तात्पर्य यह हैं कि हमें स्वच्छता के अतिरिक्त अपने घर में शुचि व अशुचि का भी ध्यान रखना चाहिए।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- हम आचमन क्यों करते हैं? कण्ठ शोधन के लिए आचमन किया जाता है। आचमन करने से कफ आदि की सफाई हो जाती है और श्वास क्रिया में तथा मंत्रों के उच्चारण में सहायता मिलती है। अन्यथा कफ आदि के कारण मंत्रोच्चारण में त्रुटि हो सक्ती है। तीन बार आचमन करने से कामिक, मानसिक और वाचिक त्रिविध पापों की निवृत्ति होती है।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

१६ जून की ग्रह स्थिति :- मिथुन में सूर्य, बुध; कन्या में शनि; वृश्चिक में राहु; मेष में गुरु; वृष में भौम, शुक्र, केतू।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

दिन मान	आय	जून	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, ग्रीष्म/ वर्षा ऋतु, उतरायण / दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
35 13	2	16	गुरु	प्रति प्र	12-17AM	मूल प्र	12-24 AM	धौम्य: गुरु हर गोबिन्द सिंह जी जयन्ती।	5:22	7:40
13	3	17	शुक्र	द्विती प्र	11-23PM	पू.षा. प्र	12-16 AM	प्रवर्ध:।	5:22	7:40
13	4	18	शनि	तृती प्र	11-07PM	उ.षा. प्र	12-44 AM	क्षय: 6-19 प्रात: मकर में चन्द्र।	5:22	7:41
13	5	19	रवि	चतु प्र	11-30PM	श्रवण प्र	1-51 AM	मुसुलं, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 10:19 रात)।	5:23	7:41
12	6	20	सोम	पंच प्र	12-32AM	धनि प्र	3-36 AM	शूलम्, 2-39 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	5:23	7:41
12	7	21	भौम	षष्ठी प्र	2-08AM	शत	दिन रात	मृत्यु:, वर्षाऋतु प्रारम्भ, दक्षिणायण।	5:23	7:41
11	8	22	बुध	सप्त प्र	4-10AM	शत दि	5-53 AM	मानसम्, महात्मा नन्दलाल जी (वडगाम) यज्ञ, 1-52 रात मीन में चन्द्र।	5:23	7:42
11	9	23	गुरु	अष्ट	दिन रात	पू.भा. दि	8-34 AM	मुद्गरम्, अधिक दिन।	5:23	7:42

10	10	24	शुक्र	अष्ट दि	6-28AM	उ.भा. दि	11-28AM	ध्वज:।	5:24	7:42
10	11	25	शनि	नवम दि	8-49AM	रेव दि	2-22 PM	प्रजापत्य: 2-22 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	5:24	7:42
10	12	26	रवि	दश दि	10-59AM	अश्विदि	5-04 PM	आनन्द:।	5:24	7:42
10	13	27	सोम	एका दि	12-47PM	भरण दि	7-22 PM	चर:, योगिनी एकादशी, स्वामी श्यामलाल (ओगरा) जयन्ती, 1-52 रात वृष में चन्द्र।	5:25	7:42
09	14	28	भौम	द्वाद दि	2-04PM	कृति प्र	9-09 PM	मुसुलं, 12-43 रात कर्क में बुध।	5:25	7:42
08	15	29	बुध	त्रयो दि	2-47PM	रोहि प्र	10-21 PM	शूलम्, 12-29 दिन मिथुन में शुक्र।	5:25	7:42
08	16	30	गुरु	चर्तु दि	2-53PM	मृग प्र	10-58 PM	मृत्यु: 10-44 दिन मिथुन में चन्द्र।	5:26	7:42
08	17	जुल	शुक्र	अमा दि	2-24PM	आर्द्रा प्र	11-02 PM	काम्य:।	5:26	7:42

श्राद्ध :- प्रतिपदा से अष्टमी तक अपने दिन नवमी से अमावस्या तक पहले दिन

मध्याह्न:- प्रतिपदा से अष्टमी तक अपने दिन नवमी व दशमी पहले दिन एकादशी से अमावस्या तक अपने दिन

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- कपूर प्रज्वलित देवी देवताओं की आरती क्यों की जाती है? प्राचीनकाल से ही हमारे देश में देशी घी के दीपक से और कपूर से देवी देवताओं की आरती करने का प्रचलन चला आ रहा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार देवी देवता आरती करने से प्रसन्न होते हैं और साधक की मनोकामना पूर्ण करते हैं। कपूर जलाने से देवदोष तथा पितृदोष का शमन होता है। कपूर दहन में बाहरी वातावरण को शुद्ध करने की अद्भुत क्षमता है। कपूर जलाने से घर का वातावरण शुद्ध रहता है

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

२ जुलाई की ग्रह स्थिति :- मिथुन में सूर्य, शुक्र; कर्क में बुध; कन्या में शनि; वृश्चिक में राहु; मेष में गुरु; वृष में भौम, केतू। सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

मान	आष	जुल	वार	तिथि		समय	नक्षत्र		समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, वर्षा ऋतु - दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
35 07	18	2	शनि	प्रति	दि	1-23PM	पुन	प्र	10-35 PM	छत्रम्, 4-44 दिन कर्क में चन्द्र।	5:26	7:42
05	19	3	रवि	द्विती	दि	11-56AM	तिष्या	प्र	9-45 PM	श्रीवत्स:।	5:27	7:42
04	20	4	सोम	तृती	दि	10-08AM	अश्ले	प्र	8-35 PM	सौम्य:, 8-35 रात सिंह में चन्द्र।	5:27	7:42
03	21	5	भौम	चतु	दि	8-03AM	मघा	दि	7-13 PM	कालदण्ड:।	5:28	7:42
02	22	6	बुध	पंच	दि	5-49AM	पू.फा.	दि	5-43 PM	स्थिर:, त्रयह: (षष्ठी प्र 3-30), कुमार षष्ठी, गुफबल वारामुला पांजला यात्रा, 11-20 रात कन्या में चन्द्र।	5:28	7:42
35 00	23	7	गुरु	सप्त	प्र	1-09AM	उ.फा.	दि	4-10 PM	मातंग:, हार सप्तमी।	5:29	7:42
34 56	24	8	शुक्र	अष्ट	प्र	10-51PM	हस्त	दि	2-38 PM	अमृतम्, हार अष्टमी, मंज़गाम यात्रा, 1-54 रात तुला में चन्द्र।	5:29	7:42
55	25	9	शनि	नवम	प्र	8-39PM	चित्र	दि	1-11 PM	काण्ड:, हार नवमी, शारिका जयन्ती, ज़्या देवी जयन्ती विजविहारा।	5:30	7:41

53	26	10	रवि	दश दि	6-35PM	स्वात दि	11-52AM	अलापकम्, 4-59 रात वृश्चिक में चन्द्र।	5:30	7:41
52	27	11	सोम	एका दि	4-43PM	विशा दि	10-43AM	मैत्रम्, देवशयनी एकादशी व्रत।	5:31	7:41
48	28	12	भौम	द्वाद दि	3-05PM	अनु दि	9-48AM	वज्रम्, हार वाह, श्री भगवान गोपीनाथ जी जयन्ती, लुकभवन यात्रा, हरिस्वाप।	5:31	7:41
45	29	13	बुध	त्रयो दि	1-44PM	ज्येष्ठ दि	9-09AM	ध्वांक्षः, 9-09 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, सन्त राधा देवी यज्ञ सागम।	5:32	7:40
45	30	14	गुरु	चर्तु दि	12-45PM	मूल दि	8-50AM	धौम्यः, ज्वाला चतुर्दशी, खव यात्रा।	5:32	7:40
40	31	15	शुक्र	पूर्णि दि	12-09PM	पू.षा. दि	8-55AM	प्रवर्धः, मासान्त, व्यास पूजा, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, गुरु पूर्णिमा, छड़ी का पहला स्नान, 3-00 दिन मकर में चन्द्र।	5:33	7:40

श्राद्ध :- प्रतिपदा से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।
मध्याह्नः- प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- हम आचमन क्यों करते हैं? कण्ठ शोधन के लिए आचमन किया जाता है। आचमन करने से कफ आदि की सफाई हो जाती है और श्वास क्रिया में तथा मंत्रों के उच्चारण में सहायता मिलती है। अन्यथा कफ आदि के कारण मंत्रोच्चारण में त्रुटि हो सकती है। तीन बार आचमन करने से कामिक, मानसिक और वाचिक त्रिविध पापों की निवृत्ति होती है।

श्रावण कृष्ण पक्ष

१६ जुलाई की ग्रह स्थिति :- मिथुन में सूर्य, शुक्र; कर्क में बुध; कन्या में शनि; मेष में गुरु; वृष में भौम, केतू; वृश्चिक में राहु।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

मान	श्रा	जुल	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षाऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
34 40	1	16	शनि	प्रति दि	12-02PM	उ.षा. दि	9-27 AM	क्षय:, 3-21 रात कर्क में सूर्य।	5:34	7:39
35	2	17	रवि	द्विती दि	12-26PM	श्रवण दि	10-29 AM	मुसुलं, संक्रान्ति व्रत, 11-12 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	5:34	7:39
35	3	18	सोम	तृती दि	1-22PM	धनि दि	12-03 PM	शूलम्, संकट निवारण चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय 9:21 रात)।	5:35	7:38
33	4	19	भौम	चतु दि	2-50PM	शत दि	2-07 PM	मृत्यु:।	5:36	7:38
30	5	20	बुध	पंच दि	4-45PM	पू.भा. दि	4-37 PM	काम्य:, पाजंथ यात्रा, लोकमान्य तिलक जयन्ती, 9-58 दिन मीन में चन्द्र, 11-45 दिन सिंह में बुध।	5:36	7:37
28	6	21	गुरु	षष्ठी दि	6-59PM	उ.भा. दि	7-27 PM	छत्रम्।	5:37	7:37
27	7	22	शुक्र	सप्त प्र	9-22PM	रेव प्र	10-24 PM	श्रीवत्स:, शुक्र अस्त, 10-24 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	5:37	7:36
23	8	23	शनि	अष्ट प्र	11-39PM	अश्विप्र	1-16 AM	सौम्य:, 11-54 रात कर्क में शुक्र।	5:38	7:36

20	9	24	रवि	नवम प्र	1-39AM	भरण प्र	3-49 AM	कालदण्डः।	5:39	7:35
15	10	25	सोम	दश प्र	3-07AM	कृति	दिन रात	स्थिरः, 10-23 दिन वृष में चन्द्र, 6-25 शां मिथुन में भौम।	5:39	7:34
13	11	26	भौम	एका प्र	3-57AM	कृति दि	5-52 AM	मुसुलंः, कमला एकादशी।	5:40	7:34
10	12	27	बुध	द्वाद प्र	4-02AM	रोहि दि	7-16 AM	शूलम्, 7-42 शां मिथुन में चन्द्र।	5:41	7:33
10	13	28	गुरु	त्रयो प्र	3-24AM	मृग दि	7-57 AM	मृत्युः।	5:41	7:32
05	14	29	शुक्र	चर्तु प्र	2-04AM	आर्दा दि	7-55 AM	काम्यः, 1-27 रात कर्क में चन्द्र।	5:42	7:32
03	15	30	शनि	अमा प्र	12-10AM	पुन दि	7-13 AM	छत्रम्,।	5:43	7:31

श्राद्ध :- प्रतिपदा से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से अमावस्या तक अपने दिन।

मध्याह्न:- प्रतिपदा से अमावस्या तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- प्राणायाम क्या है? प्राणायाम से क्या कोई लाभ होता है?

प्राणायाम से श्वास क्रिया का नियमन होता है। इसका सीधा अर्थ प्राणों का व्यायाम करना होता है। प्राणायाम करने से ही ऋषि मुनियों ने दीर्घायु प्राप्त किया। प्राणायाम के द्वारा स्वेच्छा से मृत्यु प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त होती है। प्राणायाम के द्वारा मनुष्य मन को निर्यत्रित करके 'प्राणवायु' को पकड़ता है और छोड़ता है। और इच्छानुसार प्राणें को कपाल में स्थित 'ब्रह्म रन्ध्र' में चढ़ाकर 'इच्छा मृत्यु' पा सकता है किन्तु इसके लिए कठिन साधना की आवश्यकता है।

श्रावण शुक्ल पक्ष

३१ जुलाई की ग्रह स्थिति :- कर्क में सूर्य, शुक्र; सिंह में बुध; कन्या में शनि; वृश्चिक में राहु; मेष में गुरु; वृष में केतू; मिथुन में भौम; सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

मान		जुल	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, वर्षाऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
34 00	16	31	रवि	प्रति प्र	9-48PM	तिष्या दि	5-57 AM	श्रीवत्सः, 4-17 रात सिंह में चन्द्र।	5:43	7:30
33 55	17	अगस्त	सोम	द्विती दि	7-07PM	मघा प्र	2-20AM	ध्वांक्षः।	5.44	7:29
53	18	2	भौम	तृती दि	4-15PM	पू.फा. प्र	12-16AM	धौम्यः, 5-44 रात(अगले प्रातः) कन्या में चन्द्र।	5:45	7:2
50	19	3	बुध	चतु दि	1-22PM	उ.फा. प्र	10-12PM	प्रवर्धः।	5:45	7:28
45	20	4	गुरु	पंच दि	10-35AM	हस्त प्र	8-17PM	क्षयः, नाग पंचमी, नागड़ढी महायज्ञ (अछबल), कुमार षष्ठी, ब्रह्मचारी रघुनाथ जी यज्ञ अम्फला।	5:46	7:27
43	21	5	शुक्र	षष्ठी दि	7-59AM	चित्र दि	6-37PM	गजः, त्रयह : (सप्त प्र 5-40), श्री तुलसी दास जयन्ती, 7-25 प्रातः तुला में चन्द्र।	5:47	7:26
40	22	6	शनि	अष्ट प्र	3-42AM	स्वात दि	5-15PM	सिद्धः।	5:48	7:25
38	23	7	रवि	नवम प्र	2-05AM	विशा दि	4-15PM	उन्मूलं, 10-28 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	5:48	7:24

33	24	8	सोम	दश प्र	12-52AM	अनु	दि	3-37 PM	मानसम्।	5:49	7:23
27	25	9	भौम	एका प्र	12-01AM	ज्येष्ठ	दि	3-22 PM	मुद्गरम्, पवित्र एकादशी, यज्ञ जनार्धन धर, 3-22 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ ।	5:50	7:22
22	26	10	बुध	द्वाद प्र	11-33PM	मूल	दि	3-29 PM	ध्वजः, श्रावण द्वादशी, विजयेश्वर निवासी ज्यो. कण्ठ शर्मा अन्तर्ध्यान दिवस, शुपियन यात्रा।	5:50	7:21
22	27	11	गुरु	त्रयो प्र	11-28PM	पू.षा.	दि	3-58 PM	प्रजापत्यः, 10-09 रात मकर में चन्द्र।	5:51	7:20
17	28	12	शुक्र	चर्तु प्र	11-46PM	उ.षा.	दि	4-50 PM	आनन्दः।	5:52	7:19
12	29	13	शनि	पूर्णि प्र	12-27AM	श्रवण	दि	6-05 PM	स्थिरः रक्षा बन्धन, अमरनाथ व थजवारा विजविहारा यात्रा।	5:52	7:18

श्राद्ध :- प्रतिपदा व द्वितीया अपने दिन, तृतीया से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्नः- प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- देवी देवताओं पर लोग पानी वाला नारियल क्यों चढ़ाते हैं? हिन्दू धर्म में नारियल का बहुत अधिक महत्व है। नारियल को शुभ, सौभाग्य व समृद्धि का प्रतीक भी माना जाता है। कुछ लोग नारियल को भगवान शिव का स्वरूप मानते है क्योकि उसमें तीन आँखें बनी होती है। जिस तरह नारियल ऊपर से अत्यन्त कठोर किन्तु अन्दर से नरम होता है, उसी तरह हर इन्सान को होना चाहिए। ऊपर से भले ही कठोरता का आवरण धारण किये रहो किन्तु इन्सानियत का त्याग मत करो अर्थात् नारियल की भाँति अन्दर से नर्म और दयालु हृदय बने रहो तो नारियल की तरह तुम्हें लोग पूज्यनीय समझेंगे।

भाद्र कृष्ण पक्ष

१४ अगस्त की ग्रह स्थिति:- कर्क में सूर्य, शुक्र; सिंह में बुध (वक्री); कन्या में शनि; वृश्चिक में राहु; मेष में गुरु; वृष में केतू; मिथुन में भौम; कर्क में बुध। सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

मान	श्रा	अग	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, वर्षाऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
33 07	30	14	रवि	प्रति प्र	1-34AM	धनि प्र	7-44 PM	मातंग:, 6-52 प्रात: कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	5:53	7:17
02	31	15	सोम	द्विती प्र	3-06AM	शत प्र	9-48 PM	अमृतम्, भारत स्वतन्त्रता दिवस,।	5:54	7:16
32 57	32	16	भौम	तृती प्र	5-02AM	पू.भा.प्र	12-15AM	काण्ड:, मासान्त, कुमार तृतीया, 5-36 सायं मीन में चन्द्र, 12-33 रात कर्क में वक्री बुध ।	5:54	7:15
52	1	17	बुध	चतु	दिन रात	उ.भा.प्र	3-01 AM	अलापकम्:, संक्रान्ति व्रत, स्यंध आरम्भ, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:51रात), अधिक दिन, नवदल यात्रा, 11-48 दिन <u>A</u>	5:55	7:14
52	2	18	गुरु	चतु दि	7-17AM	रेव	दिन रात	मैत्रम्,। <u>A</u> सिंह में सूर्य, 7-45 प्रात: सिंह में शुक्र।	5:56	7:13
50	3	19	शुक्र	पंच दि	9-43AM	रेव दि	5-59AM	श्रीवत्स:, चन्दन षष्ठी (चन्द्रोदय 9:55 रात), 5-59 प्रात: मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	5:56	7:12
45	4	20	शनि	षष्ठी दि	12-10PM	अश्विदि	9-00AM	सौम्य:।	5:57	7:11

45	5	**21**	रवि	सप्त दि	2-26PM	भरण दि	11-51 AM	कालदण्ड:, जन्म सतम्/जन्म अष्टमी (चन्द्रोदय 11:15), 6-31 शां वृष में चन्द्र ।	5:58	7: 9
43	6	**22**	सोम	अष्ट दि	4-15PM	कृति दि	2-19 PM	स्थिर:।	5:58	7: 8
37	7	**23**	भौम	नवम दि	5-27PM	रोहि दि	4-10 PM	मातंग:, 4-50 रात मिथुन में चन्द्र।	5:59	7: 7
28	8	**24**	बुध	दश दि	5-53PM	मृग दि	5-18 PM	अमृतम्:।	6: 0	7: 6
23	9	**25**	गुरु	एका दि	5-28PM	आर्द्रा दि	5-36 PM	काण्ड:, एजा एकादशी।	6: 0	7: 5
18	10	**26**	शुक्र	द्वाद दि	4-14PM	पुन दि	5-05 PM	अलापकम्:, गोवत्सा पूजा, सुश्री अपर्णाजी जयन्ती स्वयांनन्द आश्रम पुट्ठी, 11-17 दिन कर्क में चन्द्र।	6: 1	7: 3
13	11	**27**	शनि	त्रयो दि	2-15PM	तिष्या दि	3-50 PM	मैत्रम्:।	6: 2	7: 2
08	12	**28**	रवि	चर्तु दि	11-39AM	अश्ले दि	1-58 PM	वज्रम:, 1-58 दिन सिंह में चन्द्र।	6: 2	7: 1
32 00	13	**29**	सोम	अमा दि	8-34AM	मघा दि	11-38 AM	ध्वांक्ष:, दर्म मावस, मघा मावसी, त्रयह : (प्रति प्र 5-12)।	6: 3	7: 0

श्राद्ध :- प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से अमावस्या तक पहले दिन।

मध्याह्न:- प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी का पहले दिन, षष्ठी से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी व अमावस्या का पहले दिन

भाद्र शुक्ल पक्ष

३० अगस्त की ग्रह स्थितिः- सिंह में सूर्य, शुक्र; कन्या में शनि; वृश्चिक में राहु; मेष में गुरु; वृष में केतू; मिथुन में भौम; कर्क में बुध।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाकः 1933; ईस्वी 2011

मान		अग	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिनटों में, वर्षा / शरद ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
31 55	14	30	भौम	द्विती प्र	1-42AM	पू.फा. दि	9-02 AM	धौम्यः, 2-22 दिन कन्या में चन्द्र।	6:4	6:58
50	15	31	बुध	तृती प्र	10-16PM	उ.फा.दि	6-21 AM	प्रवर्धः, हरितालिका तृतीया।	6:4	6:57
43	16	सित	गुरु	चतु प्र	7-02PM	चित्र प्र	1-26 AM	चरः, विनायक चतुर्थी, चन्द्मा का दर्शन आज न करें, 2-33 दिन तुला में चन्द्र ।	6:5	6:56
38	17	2	शुक्र	पंच दि	4-10PM	स्वात प्र	11-29 PM	मुसुलंः, वराह पंचमी, कुमार षष्ठी।	6:6	6:55
33	18	3	शनि	षष्ठी दि	1-45PM	विशा प्र	10-01 PM	शूलम्, सूर्य षष्ठी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, 4:20 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	6:6	6:53
28	19	4	रवि	सप्त दि	11-53AM	अनु प्र	9-07 PM	मृत्युः, विजया सप्तमी (11:53 दिन तक पर्व), मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, 2-23 रात सिंद में बुध।	6:7	6:52
25	20	5	सोम	अष्ट दि	10-34AM	ज्येष्ठ प्र	8-47 PM	काम्यः, माता उमा देवी (उमा नगरी) यज्ञ, गंगाष्टमी, ललेश्वरी जयन्ती, 8-47 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, शारदा अष्टमी B	6:7	6:51
23	21	6	भौम	नवम दि	9-50AM	मूल प्र	8-59 PM	छत्रम्। B यज्ञ आदर्श नगर बनतलाव।	6:8	6:50

18	22	7	बुध	दश	दि	9-37AM	पू.षा. प्र	9-41 PM	श्रीवत्स:, 3-56 रात मकर में चन्द्र।	6:9	6:48
13	23	8	गुरु	एका	दि	9-54AM	उ.षा. प्र	10-50 PM	सौम्य:, नारायणी एकादशी, गौतम नाग यात्रा।	6:9	6:47
08	24	9	शुक्र	द्वाद	दि	10-37AM	श्रवण प्र	12-23 AM	धौम्य:, इन्द्र द्वादशी,. वामन वाह, बारापुल्ला यात्रा, 3-45 दिन कर्क में भौम। A12-40 दिन कन्या में शुक्र।	6:10	6:46
03	25	10	शनि	त्रयो	दि	11-43AM	धनि प्र	2-17 AM	प्रवर्ध:, वितस्ता जयन्ती, वियवोतुर यात्रा वेरीनाग, वितस्ता त्रयोदशी, 1-18 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, A	6:11	6:44
30 58	26	11	रवि	चर्तु	दि	1-10PM	शत प्र	4-31 AM	क्षय:, अनन्त चतुर्दशी, अनन्तनाग यात्रा, पापहरण नाग, सैली कारकूट नाग यात्रा।	6:11	6:43
58	27	12	सोम	पूर्णि	दि	2-57PM	पू.भा.	दिन रात	गज:, 12-23 रात मीन में चन्द्र, पितृ पक्ष आरम्भ (पूर्णिमा व प्रतिपदा का श्राद्ध), स्वा. श्रीकण्ठ यज्ञ (मलिक आंगन)।	6:12	6:42

श्राद्ध :- प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से पूर्णिमा तक पहले दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से त्रयोदशी तक पहले दिन, चतुर्दशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- गणेश जी का वाहक मूषक (चूहा) क्यों है?

गणेश जी का भारी भरकम शरीर और सवारी मूषक की! यह बड़ा ही अजीब सा लगता है। सत्य तो यह है कि गणेश जी बुद्धि के देवता हैं और चूहा तर्क का प्रतीक माना गया है। बुद्धि सदैव तर्क परही सवार रहती है।

आश्विन कृष्ण पक्ष

१३ सितम्बर की ग्रह स्थिति:-सिंह में सूर्य, बुध;कन्या में शुक्र,शनि; वृश्चिक में राहु; मेष में गुरु (वक्री); वृष में केतू; कर्क में भौम।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

दिन मान	भाद	सित	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, शरदऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
31 53	28	13	भौम	प्रति दि	5-01PM	पू.भा. दि	7-02 AM	काण्ड:।	6:13	6:40
48	29	14	बुध	द्विती प्र	7-20PM	उ.भा. दि	9-49 AM	अलापकम्, बलिदान दिवस टिकलाल टपलू, श्री शंकर साहिब यज्ञ मुंशीचक जम्मू।	6:13	6:39
43	30	15	गुरु	तृती प्र	9-50PM	रेव दि	12-47 AM	मैत्रम्, 12-47 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	6:14	6:38
38	31	16	शुक्र	चतु प्र	12-23AM	अश्विदि	5-51 PM	वज्रम्, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:27 रात), मासान्त।	6:14	6:36
35	असू	17	शनि	पंच प्र	2-50AM	भरण प्र	6-52 PM	ध्वांक्ष:, संक्रान्ति व्रत, 1:36रात वृष में चन्द्र, 11:47 दिन कन्या में सूर्य।	6:15	6:35
28	2	18	रवि	षष्ठी प्र	4-58AM	कृति प्र	9-39 PM	धौम्य:।	6:16	6:34
28	3	19	सोम	सप्त	दिन रात	रोहि प्र	11-59 PM	प्रवर्ध:, अधिक दिन, साहिब सप्तमी।	6:16	6:32
20	4	20	भौम	सप्त दि	6-35AM	मृग प्र	1-42 AM	क्षय:, 12-56 दिन मिथुन में चन्द्र ।	6:17	6:31

15	5	21	बुध	अष्ट दि	7-31AM	आर्दा प्र	2-39AM	गज:, महा लक्ष्मी अष्टमी।	6:18	6:30
08	6	22	गुरु	नवम दि	7-37AM	पुन प्र	2-45AM	सिद्ध:, 8-48 रात कर्क में चन्द्र, 8-55 रात कन्या में बुध।	6:18	6:28
03	7	23	शुक्र	दश दि	6-52AM	तिष्या प्र	2-00AM	उन्मूलं, त्रयह: (एका प्र 5:15) इन्द्र एकादशी, सन्यासियों का श्राद्ध।	6:19	6:27
30 00	8	24	शनि	द्वाद प्र	2-53AM	अश्ले प्र	12-28AM	मानसम्:, 12:28रात सिंह में चन्द ।	6:20	6:25
29 55	9	25	रवि	त्रयो प्र	11-53PM	मघा प्र	10-18PM	मुद्गरम्:।	6:20	6:24
53	10	26	सोम	चर्तु प्र	8-24PM	पू.फा.प्र	7-38PM	ध्वज:, स्वामी प्राणनाथ भट्ट गरीव जयन्ती, 12-55 रात कन्या में चन्द्र ।	6:21	6:23
50	11	27	भौम	अमा दि	4-39PM	उ.फा.दि	6-41PM	प्रजापत्य:, पितृमावसी, विजयेश्वर यात्रा विजविहारा।	6:21	6:21

श्राद्ध :- प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से सप्तमी तक अपने दिन, अष्टमी से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से अमावस्या तक अपने दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा से सप्तमी तक अपने दिन, अष्टमी से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से अमावस्या तक अपने दिन

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- श्राद्ध किसे कहते है? मृत पितृों के उद्देश्य से जो अपने प्रिय भोज्य पदार्थ ब्राह्मण को श्रद्धापूर्वक प्रदान किये जाते हैं इस अनुष्ठान को 'श्राद्ध' कहते है। लोगों में एसा विश्वास है कि श्राद्ध में जो भोजन खिलाया जाता है वह पदार्थ ज्यों का त्यों उसी तौल अनुपात में मृत पितृ को प्राप्त होता है। वास्तव में ऐसा नहीं है। श्राद्ध में दिये गये भोजन का सूक्ष्म अंश परिणत होकर उसी अनुपात में प्राणी को प्राप्त होता है। रामायण कथा के अनुसार जब पुरुषोतम श्री रामचन्द्र जी अपने पिता का श्राद्ध कर रहे थे तब सीता जी ने श्राद्ध की समस्त सामग्री अपने हाथ से तैयार की परन्तु जब निमंत्रित ब्राह्मण भोजन करने लगे तब सीता जी दौड़कर कुटिया में जा छिपी। बाद में श्री राम जी ने सीता की घबराहट और छिपने का कारण पूछा तब वे कहने लगी ''स्वामी मैंने ब्राह्मणों के शरीर में आपके पिता श्री के दर्शन किये। अब आप ही बताइये जिन्होंने पहले मुझे समस्त आभूषणों से विभूषित अवस्था में देखा था। वे मेरे पूज्य श्वसुर जी मुझे इस तरह पसीने और मैल से सनी हुई कैसे देख पाते? ऐसा ही एक प्रसंग महाभारत में भी मिलता है जब भीष्म जी अपने पिता शान्तनु जी का पिण्डदान करने लगे। उनके सामने साक्षात् शान्तनु जी के दाहिने हाथ ने उपस्थित होकर पिण्ड ग्रहण किया। आश्विन कृष्ण पक्ष में हमारे सामाजिक उत्सवों में पितृों का सामूहिक महापर्व हैं। इस समय सभी पितृ अपने पृथ्वी लोक वासी सगे सम्बन्धियों क घर बिना बुलाये आते हैं और 'कव्य' ग्रहण करके परितृप्त होते हैं तथा अपना शुभ आशीर्वाद उन्हें प्रदान करते हैं।

आश्विन शुक्ल पक्ष

२८ सितम्बर की ग्रह स्थितिः- कन्या में सूर्य, बुध, शुक्र, शनि; वृश्चिक में राहु; मेष में गुरु (वक्री); वृष में केतू; कर्क में भौम।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाकः 1933; ईस्वी 2011

मान	असू	सित	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में,	सू उ	सू अ
29 45	12	28	बुध	प्रति दि	12-48PM	हस्त दि	1-38 PM	आनन्दः, शरद नवरात्र आरम्भ, 12-08 रात तुला में चन्द्र।	6:22	6:20
43	13	29	गुरु	द्विती दि	9-02AM	चित्र दि	10-41 AM	चरः, त्रयहः (तृती प्र 5-33) तृतीया तिथि का क्षय।	6:23	6:19
42	14	30	शुक्र	चतु प्र	2-30AM	स्वात दि	8-01 AM	मुसुलं, 12-19 रात वृश्चिक में चन्द्र।	6:23	6:17
35	15	अक	शनि	पंच प्र	12-01AM	अनु प्र	2-11 AM	अमृतम्, शुक्र उदय, यज्ञ दुर्गा मन्दिर नगरोटा, जम्मू।	6:24	6:16
30	16	2	रवि	षष्ठी प्र	10-10PM	ज्येष्ठ प्र	3-13 AM	काण्डः, कुमार षष्ठी व्रत, 3-13 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	6:25	6:15
25	17	3	सोम	सप्त प्र	9-03PM	मूल प्र	2-57 AM	अलापकम्।	6:25	6:13
20	18	4	भौम	अष्ट प्र	8-38PM	पू.षा. प्र	3-22 AM	मैत्रम्, दुर्गा अष्टमी, 4-01 दिन तुला में शुक्र।	6:26	6:12
15	19	5	बुध	नवम प्र	8-53PM	उ.षा. प्र	4-26 AM	वज्रम, महानवमी, नवरात्रा समाप्त, 9-35 प्रातः मकर में चन्द्र, यज्ञ मंगला भगवती वची।	6:27	6:11

13	20	6	गुरु	दश प्र	9-44PM	श्रवण प्र	6-02 AM	ध्वज:, विजयादशमी, दशहरा।	6:28	6: 9
08	21	7	शुक्र	एका प्र	11-05PM	धनि	दिन रात	प्रजापत्य:, पापंकुशा एकादशी, 7:00 शां कुम्भ में चन्द व पंचक आरम्भ।	6:28	6: 8
03	22	8	शनि	द्वाद प्र	12-49AM	धनि दि	8-05 AM	प्रवर्ध:।	6:29	6: 7
28 58	23	9	रवि	त्रयो प्र	2-52AM	शत दि	10-29 AM	क्षय:, 11-32 रात तुला में वुध।	6:30	6: 6
53	24	10	सोम	चर्तु प्र	5-09AM	पू.भा.दि	1-09 PM	गज:, 6-30 प्रात: मीन में चन्द्र।	6:30	6: 4
50	25	11	भौम	पूर्णि	दिन रात	उ.भा.दि	4-00 PM	सिद्ध:, अधिक दिन, स्वामी देव गिरिजी यज्ञ पुरखू कैम्प।	6:31	6: 3
43	26	12	बुध	पूर्णि दि	7-36AM	रेव प्र	6-58 PM	उन्मूलं, लवंग पुनिम, वालमिकी जयन्ती, पूर्णिमा व्रत, 6-58 शां मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त ।	6:32	6: 2

श्राद्ध :- प्रतिपदा से तृतीया तक पहले दिन, चतुर्थी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

मध्याह्न:- प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया व तृतीया पहले दिन, चतुर्थी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक :- गले में माला धारण करने का वैज्ञानिक कारण। जप करते समय साधकों को होंठ एवं जिह्वा को हिलाना पड़ता है जिस कारण कण्ठ की धमनियाँ प्रभावित होती हैं और साधक को कण्ठमाला, गलगण्ड आदि रोग होने की संभावना बन जाती है। ऐसे रोगों की संभावना से रक्षा केलिए औषधि युक्त काष्ठ तुलसी, रुद्राक्ष आदि की माला धारण करते हैं। माला में १०८ मनके होते हैं जो साधक को जप संख्या की गणना करने में सहायक होते हैं। इन १०८ मनकों का रहस्य यह है कि हमारें ऋषि व मुनियों ने कुल २७नक्षत्र बतलाये हैं और प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं इस प्रकार 27X4= 108 हुए। ऐसी मान्यता है।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

१३ अक्तूबर की ग्रह स्थिति:-कन्या में सूर्य, शनि;तुला में बुध, शुक्र; वृश्चिक में राहु; मेष में गुरु (वक्री); वृष में केतु; कर्क में भौम।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

मान	असू	अक	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, शरदऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
28 38	27	13	गुरु	प्रति दि	10-07AM	अश्विप्र	10-00PM	मानसम्।	6:33	6: 1
33	28	14	शुक्र	द्विती दि	12-39PM	भरण प्र	12-59AM	मुद्गरम्।	6:33	5:59
28	29	15	शनि	तृती दि	3-05PM	कृति प्र	3-50AM	ध्वजः, करवा चौथ, ज्यो. ऑफताम शर्मा अन्तर्ध्यान दिवस, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 7:49साय), 7:43 प्रातः वृष में चन्द्र।	6:34	5:58
23	30	16	रवि	चतु दि	5-18PM	रोहि प्र	6-22AM	प्रजापत्यः, मासान्त।	6:35	5:57
18	कत	17	सोम	पंच प्र	7-07PM	मृग	दिन रात	आनन्दः, संक्रान्ति व्रत, स्वामी गाश कौल जी निर्वाण जग त्रलोक पुरा, 7:29 शां मिथुन में चन्द्र, 11:46 रात तुला में सूर्य।	6:36	5:56
13	2	18	भौम	षष्ठी प्र	8-23PM	मृग दि	8-28AM	क्षयः।	6:36	5:55
10	3	19	बुध	सप्त प्र	8-59PM	आर्द्रा दि	9-59AM	गजः, 4-39 रात कर्क में चन्द्र।	6:37	5:54
05	4	20	गुरु	अष्ट प्र	8-49PM	पुन दि	10-47AM	सिद्धः।	6:38	5:52

28 00	5	21	शुक्र	नवम प्र	7-51PM	तिष्या दि	10-47 AM	उन्मूलं:।	6:39	5:51
27 58	6	22	शनि	दश प्र	6-05PM	अश्ले दि	10-01 AM	मानसम्:, 10-01 दिन सिंह में चन्द्र।	6:39	5:50
53	7	23	रवि	एका दि	3-36PM	मघा दि	8-30 AM	मुद्गरम्:, रमा एकादशी।	6:40	5:49
48	8	24	सोम	द्वाद दि	12-32PM	उ.फा.प्र	3-44 AM	श्रीवत्स:, 11-44 दिन कन्या में चन्द्र।	6:41	5:48
43	9	25	भौम	त्रयो दि	9-02AM	हस्त प्र	12-48 AM	सौम्य:, त्रयह: (चर्तु प्र 5-16) धनवन्तरी जयन्ती, स्वमी चुनीलाल राज़दान जयन्ती, श्री महावीर चतुर्दशी ।	6:42	5:47
40	10	26	बुध	अमा प्र	1-26AM	चित्र प्र	9-44 PM	कालदण्ड:, दीपमाला, श्री महाल्क्ष्मी पूजा, पण्डित कृपा राम दत्त आनन्दपुर साहिव प्रयाण दिवस, 11-16 दिन तुला में चन्द्र।	6:43	5:46

श्राद्ध :- प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से चतुर्दशी तक पहले दिन, अमावस्या का अपने दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी व चतुर्दशी पहले दिन, अमावस्या का अपने दिन

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- पूजा, आरती एवं अन्य धार्मिक कार्य करते समय हम शंख क्यों बजाते हैं? शंख फूकने के पीछे हिन्दू वर्ग की पूर्ण रूप से धार्मिक आस्था निहित है। अथर्ववेद के अनुसार शंख की ध्वनि जहाँ तक पहुचती है वहाँ तक का वातावरण शुद्ध व राक्षसों का नाश हो जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी शंख में भरा जल छिड़कना उचित है। शंख ध्वनि करने वाले व्यक्ति को दमा की बीमारी, श्वास रोग, फेफडों का रोग, इन्फ्लूएंजा आदि नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति बोलने में हकलाता है तो उसे बार बार प्रात: नित्य शंख फूकना चाहिए। शंख में कैल्सियम, फास्फोरस और गन्धक की मात्रा होती है शंख में भरे जल को छिड़कने से वस्तुएँ रोग रहित हो जाती है। पूजा के समय शंख में जल भरकर देव स्थान में रखें उसके बाद उसमें केसर या चन्दन का टीका लगायें। केसर या चन्दन का टीका लगाने से शंख में भरा जल सुगन्ध से परिपूर्ण हो जाता है तत्पश्चात् पूजा की समस्त सामग्रियों पर वह सुवासित जल छिड़कें तथा पूजा में उपस्थित व्यक्तियों के ऊपर छिड़कें। शंख में रखे जल को मंत्रोच्चार करते हुए छिड़कना चाहिए। जिस से कि समस्त वस्तुएं पवित्र हो जायें। ऐसी मान्यता है।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

२७ अक्टूबर की ग्रह स्थिति:- तुला में सूर्य, बुध, शुक्र; वृश्चिक में राहु; मेष में गुरु (वक्री); वृष में केतु; कर्क में भौम; कन्या में शनि। सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

दिन मान	कत	अक	वार	तिथि	समाप्ति काल	नक्षत्र	समाप्ति काल	ग्रह संचार बजे मिनटों में, शरद / हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
27 26	11	27	गुरु	प्रति प्र	9-41PM	स्वात प्र	6-44 PM	स्थिर:, स्वामी राम तीर्थ जयन्ती, भ्रातृदूज/भाई दूज, विश्वकर्म पूजा।	6:44	5:45
22	12	28	शुक्र	द्विती प्र	6-14PM	विशा दि	4-00 PM	मतंग:, 10-39 दिन वृश्चिक में चन्द्र, 7-03 शां वृश्चिक में शुक्र।	6:44	5:44
18	13	29	शनि	तृती दि	3-13PM	अनु दि	1-41 PM	अमृतम्, 3-19 दिन वृश्चिक में बुध।	6:45	5:43
14	14	30	रवि	चतु दि	12-47PM	ज्येष्ठ दि	11-57 AM	काण्ड:, 11:57 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, 10:07 रात सिंह में भौम।	6:46	5:42
09	15	31	सोम	पंच दि	11-03AM	मूल दि	10-54 AM	अलापकम्, कुमार षष्ठी।	6:47	5:41
05	16	नवम	भौम	षष्ठी दि	10-06AM	पू.षा. दि	10-37 AM	मैत्रम्, सूर्य षष्ठी, 4-40 दिन मकर में चन्द्र।	6:48	5:40
01	17	2	बुध	सप्त दि	9-56AM	उ.षा. दि	11-06 AM	वज्रम, स्वामी गोकुल नाथ जी जयन्ती, अम्बिका विहार, गोलगुजराल।	6:49	5:39
26 57	18	3	गुरु	अष्ट दि	10-31AM	श्रवण दि	12-19 PM	ध्वज:, गोपाल अष्टमी, 1-10 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	6:49	5:39

53	19	4	शुक्र	नवम दि	11-47AM	धनि दि	2-09 PM	प्रजापत्य:।	6:50	5:38
48	20	5	शनि	दश दि	1-35PM	शत दि	4-30 PM	आनन्द:।	6:51	5:37
45	21	6	रवि	एका दि	3-46PM	पू.भा.प्र	7-13 PM	चर:, हरिवोधिनी एकादशी, शिव स्वाप, 12:31 दिन मीन में चन्द्र।	6:52	5:36
43	22	7	सोम	द्वाद प्र	6-13PM	उ.भा.प्र	10-09 PM	मुसुलं:।	6:53	5:35
38	23	8	भौम	त्रयो प्र	8-46PM	रेव प्र	1-09 AM	शूलम्, 1-09 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त	6:54	5:34
35	24	9	बुध	चर्तु प्र	11-19PM	अश्विप्र	4-09 AM	मृत्यु:।	6:55	5:34
30	25	10	गुरु	पूर्णि प्र	1-46AM	भरण	दिन रात	काम्य:, श्री गुरु नानक देव जयन्ती, दीपदान मुहूर्त।	6:56	5:33

श्राद्ध :- प्रतिपदा से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से नवमी तक पहले दिन, दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- देवी देवताओं पर लोग पानी वाला नारियल क्यों चढ़ाते हैं?

हिन्दू धर्म में नारियल का बहुत अधिक महत्व है। नारियल को शुभ, सौभाग्य व समृद्धि का प्रतीक भी माना जाता है। कुछ लोग नारियल को भगवान शिव का स्वरूप मानते है क्योकि उसमें तीन आँखें बनी होती है। जिस तरह नारियल ऊपर से अत्यन्त कठोर किन्तु अन्दर से नरम होता है, उसी तरह हर इन्सान को होना चाहिए। ऊपर से भले ही कठोरता का आवरण धारण किये रहो किन्तु इन्सानियत का त्याग मत करो अर्थात् नारियल की भाँति अन्दर से नर्म और दयालु हृदय बने रहो तो नारियल की तरह तुम्हें लोग पूज्यनीय समझेंगे।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

११ नवम्बर की ग्रह स्थिति:- तुला में सूर्य; वृश्चिक में बुध, शुक्र राहु; मेष में गुरु(व); वृष में केतु; सिंह में भौम; कन्या में शनि। सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

मान	कत	नव	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
26 26	26	**11**	शुक्र	प्रति प्र	4-01AM	भरण दि	7-01 AM	मुद्गरम्, 1-43 दिन वृष में चन्द्र।	6:57	5:32
23	27	**12**	शनि	द्विती प्र	6-01AM	कृति दि	9-42 AM	ध्वज:।	6:57	5:32
19	28	**13**	रवि	तृती	दिन रात	रोहि दि	12-06 PM	प्रजापत्य:, 1-11 रात मिथुन में चन्द्र।	6:58	5:31
15	29	**14**	सोम	तृती दि	7-39AM	मृग दि	2-09 PM	आनन्द:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 8:17 रात)।	6:59	5:30
12	30	**15**	भौम	चतु दि	8-52AM	आर्द्रा दि	3-47 PM	चर:, मासान्त, 10-11 दिन तुला में शनि।	7: 0	5:30
09	मगर	**16**	बुध	पंच दि	9-33AM	पुन दि	4-53 PM	मुसुलं, संक्रान्ति व्रत, 10-39 दिन कर्क में चन्द्र, 11-34 रात वृश्चिक में सूर्य।	7: 1	5:29
05	2	**17**	गुरु	पष्ठी दि	9-40AM	तिष्या दि	5-24 PM	शूलम्।	7: 2	5:29
02	3	**18**	शुक्र	सप्त दि	9-09AM	अश्ले दि	5-18 PM	मृत्यु:, 5-18 दिन सिंह में चन्द्र।	7: 3	5:28

25 59	4	19	शनि	अष्ट दि	7-59AM	मघा दि	4-35PM	काम्यः, प्रग्रहः (नवम प्र 6-12), महाकाल भैरव अष्टमी।	7:4	5:28
56	5	20	रवि	दश प्र	3-51AM	पू.फा.दि	3-16PM	छत्रम्, 8-51 रात कन्या में चन्द्र।	7:5	5:27
52	6	21	सोम	एका प्र	1-02AM	उ.फा.दि	1-25PM	श्रीवत्सः, उत्पन्ना एकादशी, 10-36 रात धनु में शुक्र।	7:6	5:27
49	7	22	भौम	द्वाद प्र	9-52PM	हस्त दि	11-08AM	सौम्यः, 9-53 रात तुला में चन्द्र।	7:6	5:26
47	8	23	बुध	त्रयो प्र	6-28PM	चित्र दि	8-35AM	कालदण्ड :।	7:7	5:26
44	9	24	गुरु	चर्तु दि	3-01PM	विशा प्र	3-13AM	प्रवर्धः, 9-52 रात वृश्चिक में चन्द्र।	7:8	5:26
41	10	25	शुक्र	अमा दि	11-40AM	अनु प्र	12-44AM	क्षयः।	7:9	5:25

श्राद्ध :- प्रतिपदा से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी से नवमी तक पहले दिन, दशमी से चतुर्दशी तक अपने दिन, अमावस्या का पहले दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी से नवमी तक पहले दिन, दशमी से चतुर्दशी तक अपने दिन, अमावस्या का पहले दिन

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- पूजा, आरती एवं अन्य धार्मिक कार्य करते समय हम शंख क्यों बजाते हैं?

शंख फूकने के पीछे हिन्दू धर्म की पूर्ण रूप से धार्मिक आस्था निहित है। अथर्ववेद, ४/१०/२ के अनुसार शंख की ध्वनि जहाँ तक पहुचती है वहाँ तक का वातावरण शुद्ध व राक्षसों का नाश हो जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी शंख में भरा जल छिड़कना उचित है। शंख ध्वनि करने वाले व्यक्ति को दमा की बीमारी, श्वास रोग, फेफड़ों का रोग, इन्फलूएंजा आदि नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति बोलने में हकलाता है तो उसे बार बार प्रातः नित्य शंख फूकना चाहिए। शंख में कैल्सियम, फास्फोरस और गन्धक की मात्रा होती है शंख में भरे जल को छिड़कने से वस्तुएं रोग रहित हो जाती है। पूजा के समय शंख में जल भरकर देव स्थान में रखें उसके बाद उसमें केसर या चन्दन का टीका लगायें। केसर या चन्दन का टीका लगाने से शंख में भरा जल सुगन्ध से परिपूर्ण हो जाता है तत्पश्चात् पूजा की समस्त सामग्रियों पर वह सुवासित जल छिड़कें तथा पूजा में उपस्थित व्यक्तियों के ऊपर छिड़कें। शंख में रखे जल को मंत्रोच्चार करते हुए छिड़कना चाहिए। जिस से कि समस्त वस्तुएं पवित्र हो जायें। ऐसी मान्यता है।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

२६ नवम्बर की ग्रह स्थिति:- वृश्चिक में सूर्य, राहु, बुध; धनु में शुक्र; मेष में गुरु(व); वृष में कूतु; सिंह में भौम; तुला में शनि।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

मान	मार्ग	नव	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
25 38	11	26	शनि	प्रति दि	8-34AM	ज्येष्ठ प्र	10-37 PM	गज:, त्रयह: (द्विती प्र 5-53), 10-37 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	7:10	5:25
26	12	27	रवि	तृती प्र	3-46AM	मूल प्र	9-00 PM	सिद्ध:, श्री सत्य साई वावा जयन्ती।	7:11	5:25
33	13	28	सोम	चतु प्र	2-19AM	पू.षा. प्र	8-02 PM	उन्मूलं, 1-34 रात मकर में चन्द्र।	7:12	5:25
31	14	29	भौम	पंच प्र	1-39AM	उ.षा. प्र	7-47 PM	मनसम्, श्री गुरु तेगवहादुर जी शहीदी दिवस।	7:13	5:25
28	15	30	बुध	षष्ठी प्र	1-46AM	श्रवण प्र	8-18 PM	छत्रम्, कुमार षष्ठी व्रत।	7:13	5:24
26	16	दिस	गुरु	सप्त प्र	2-39AM	धनि प्र	9-35 PM	श्रीवत्स:, 8-51 प्रात: कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	7:14	5:24
24	17	2	शुक्र	अष्ट प्र	4-14AM	शत प्र	11-22 PM	सौम्य:।	7:15	5:24
22	18	3	शनि	नवम प्र	6-22AM	पू.भा. प्र	2-03 AM	कालदण्ड:, 7-23 शां मीन में चन्द्र।	7:16	5:24

20	19	4	रवि	दश	दिन रात	उ.भा. प्र	4-56AM	स्थिरः।	7:17	5:24
18	20	5	सोम	दश दि	8-50AM	रेव	दिन रात	मातंगः।	7:18	5:24
16	21	6	भौम	एका दि	11-27AM	रेव दि	7-58AM	शूलम्, मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती (कुमार जी आश्रम मुट्ठी) 7-58 प्रातः मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	7:18	5:24
14	22	7	बुध	द्वाद दि	2-02PM	अश्वि दि	10-59AM	मृत्युः।	7:19	5:24
13	23	8	गुरु	त्रयो दि	4-24PM	भरण दि	1-49PM	काम्यः, 8-29 रात वृष में चन्द्र।	7:20	5:24
11	24	9	शुक्र	चर्तु प्र	6-27PM	कृति दि	4-21PM	छत्रम्।	7:21	5:24
10	25	10	शनि	पूर्णि प्र	8-27PM	रोहि प्र	6-31PM	श्रीवत्स : अन्नपूर्णा जयन्ती, चन्द्र ग्रहण।	7:21	5:25

श्राद्ध :- प्रतिपदा व द्वितीया पहले दिन, तृतीया से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से त्रयोदशी तक पहले दिन, चतुर्दशी व पूर्णिमा का अपने दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा व द्वितीया पहले दिन, तृतीया से दशमी तक अपने दिन, एकादशी का पहले दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- देवी देवताओं की मूर्तियों की लोग परिक्रमा क्यों करते हैं? देव मूर्तियों की परिक्रमा करना फलदायक माना गया है। धर्मशास्त्रों के अनुसार जहाँ पर देवी या देवता की प्राण प्रतिष्ठत मूर्ति स्थापित होती है उस स्थान के मध्य से कुछ दूरी तक उस शक्ति स्वरूप की दिव्यप्रभा विद्यमान रहती है। उस देव शक्ति के ज्योतिमंड़ल से निकलने वाले तेज को हम परिक्रमा करके प्राप्त करते हैं। मूर्ति की परिक्रमा सदैव दाहिनी ओर से करनी चाहिए। उल्टी दिशा में परिक्रमा करने से दैवी शक्ति के ज्योतिमंड़ल की गति और हमारे अन्दर स्थित परमाणुओं में टकराव पैदा होने से हमारा तेज नष्ट हो जाता है। शस्त्रों में कुछ देवी देवताओं की निश्चित परिक्रमा का विधान है भगवान श्री कृष्ण की तीन, देवी की एक व भगवान शंकर की आधी प्रिक्रमा करनी चाहिए।

पौष कृष्ण पक्ष

११ दिसम्बर की ग्रह स्थितिः- वृश्चिक में सूर्य, बुध, राहु; धनु में शुक्र; मेष में गुरु (व); वृष में केतु; सिंह में भौम; तुला में शनि।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2011

मान	मगर	दिस	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिनटों में, हेमन्त/शिशर ऋतु, दक्षिणायन।	सू उ	सू अ
25 08	26	11	रवि	प्रति प्र	9-19PM	मृग प्र	8-16 PM	सौम्यः, मुंजहर तहर, मातृका पूजा, 7-27 प्रातः मिथुन में चन्द्र।	7:22	5:25
06	27	12	सोम	द्विती प्र	10-04PM	आर्द्रा प्र	9-34 PM	कालदण्डः।	7:23	5:25
04	28	13	भौम	तृती प्र	10-21PM	पुन प्र	10-26 PM	स्थिरः, 4-15 दिन कर्क में चन्द्र।	7:24	5:25
03	29	14	बुध	चतु प्र	10-12PM	तिष्या प्र	10-52 PM	मातंगः, संकट निवारण चतुर्थी व्रत, (चन्द्रोदय 9:07 रात)।	7:24	5:26
03	30	15	गुरु	पंच प्र	9-36PM	अश्ले प्र	10-52 PM	अमृतम्, मासान्त, 10-52 रात सिंह में चन्द्र, 3-49 रात मकर में शुक्र, महात्मा श्री काशीनाथ कौल यज्ञ, त्रलोकपुरा गोल गुजलराल, जम्मू।	7:25	5:26
03	पौष	16	शुक्र	षष्ठी प्र	8-35PM	मघा प्र	10-27 PM	काण्डः, संक्रान्ति व्रत, 2-13 दिन धनु में सूर्य, पौष मास आरम्भ।	7:26	5:26
02	2	17	शनि	सप्त प्र	7-09PM	पू.फा. प्र	9-38 PM	अलापकम्, शारदा देवी जयन्ती ऊधमपुर, 3-23 रात कन्या में चन्द्र।	7:26	5:27
02	3	18	रवि	अष्ट दि	5-21PM	उ.फा. प्र	8-28 PM	मैत्रम्, महाकाली (भैरव) जयन्ती, श्री रघुनाथ जी कुकिलू यज्ञ।	7:27	5:27
01	4	19	सोम	नवम दि	3-12PM	हस्त प्र	6-58 PM	वज्रम्, 6-07 रात तुला में चन्द्र।	7:27	5:27

01	5	20	भौम	दश दि	12-47PM	चित्र दि	5-12 PM	ध्वांक्षः, श्री आनन्देश्वर भैरव जयन्ती, स्वामी नन्द वव साहिव जयन्ती लाले दा वाग।	7:28	5:28
01	6	21	वुध	एका दि	10-10AM	स्वात दि	3-15 PM	धौम्यः, पण्डित कृपाराम दत्त वलिदान दिवस, त्रयहः (द्वाद प्र 7-25) सफलता एकादशी।	7:28	5:28
01	7	22	गुरु	त्रयो प्र	4-40AM	विशा दि	1-12 PM	प्रवर्यः, 7-43 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र।	7:29	5:29
01	8	23	शुक्र	चर्तु प्र	2-01AM	अनु दि	11-11 AM	क्षयः।	7:29	5:29
02	9	24	शनि	अमा प्र	11-36PM	ज्येष्ठ दि	9-18 AM	गजः, ख्यचिरिमावस (यक्षामावसी), 9-18 प्रातः धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	7:30	5:30

श्राद्ध :- प्रतिपदा से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयोदशी से अमावस्या तक अपने दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा से दशमी तक अपने दिन, एकादशी व द्वादशी पहले दिन, त्रयोदशी से अमावस्या तक अपने दिन।

सप्तर्षि 4930, विक्रमी 1911, ईस्वी 18 दिसम्बर1854, पौष कृष्ण द्वादशी (जयन्ती)

सं. 4990,वि.1971, ई.14.01.1915, माघ कृष्ण १४ (अन्तर्ध्यान दिवस)

यः सर्वात्माखिलजनविभुर्देवदेवोमहेशः, स्वातन्त्र्यस्थो ध्रुवपदगतोनिश्चलात्मा वरेण्यः।
विश्वोत्तीरर्णोभव भयहरः स्वेच्छया विश्वपूर्ण- स्तं श्रीरामं त्रिभुवनगुरुं स्वात्मरूप नमामि॥

मैं तीनों भुवनों, भव, अभव, अतिभव के गुरु सब जड चेतना में व्याप्त होकर क्रीडनशील सद्गुरु श्री राम को मेरा अपना ही स्वरूप हैं नमस्कार करता हूँ, कैसे हैं वह राम? उत्तर जो सभी जड चेतना को सत्ता देने वाले,सभी जीवों में व्यापक, देवों के भी देवता, महान् ऐश्वर्य युक्त, स्वतंत्र पद पर स्थित अविनाशी तथा अटल स्वभाव वाले तथा उत्तम हैं, जगत से परे हैं और भक्तों के जन्ममरण का भय दूर करते हैं, ऐसा होते हुए भी विश्वमय भी हैं।

(महामहेश्वराचार्य श्री राम जी)

पौष शुक्ल पक्ष

२५ दिसम्बर की ग्रह स्थितिः- धनु में सूर्य; मकर में शुक्र; मेंष में गुरु(व); सिंह में भौम; तुला में शनि; वृश्चिक में बुध, राहु।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाकः 1933; ईस्वी 2011 / 2012

मान	पौष	दिस	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, शिशिर ऋतु - उतरायण	सू उ	सू अ
25 02	10	25	रवि	प्रति प्र	9-34PM	मूल दि	7-42 AM	सिद्धः, क्रिसमिस, श्री मिरज़काक जयन्ती।	7:30	5:30
02	11	26	सोम	द्विती प्र	8-02PM	उ.षा. प्र	5-52 AM	मृत्युः, 12-17 दिन मकर में चन्द्र।	7:31	5:31
03	12	27	भौम	तृती प्र	7-07PM	श्रवण प्र	5-51 AM	अलापकम्, स्वर्गीय प्रेमनाथ बट्ट दिवस (चेतना दिवस)।	7:31	5:32
04	13	28	बुध	चतु प्र	6-54PM	धनि प्र	6-34 AM	मैत्रम्, 6-07 शां कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	7:32	5:32
05	14	29	गुरु	पंच प्र	7-26PM	शत	दिन रात	वज्रम्।	7:32	5:33
06	15	30	शुक्र	षष्ठी प्र	8-42PM	शत दि	7-59 AM	सौम्यः, कुमारषष्ठी व्रत, 3-30 रात मीन में चन्द्र।	7:32	5:34
06	16	31	शनि	सप्त प्र	10-36PM	पू.भा. दि	10-04 AM	कालदण्डः।	7:32	5:34
08	17	जन	रवि	अष्ट प्र	12-58AM	उ.भा. दि	12-42 PM	स्थिरः, ईस्वी 2012 आरम्भ।	7:33	5:35

09	18	2	सोम	नवम प्र	3-36AM	रेव दि	3-39 PM	मातंग:, श्री पृथ्वीनाथ भट्ट नूरपुरा त्राल जयन्ती, 3-34 दिन मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	7:33	5:36
10	19	3	भौम	दश प्र	6-13AM	अश्विप्र	6-42 PM	अमृतम्।	7:33	5:36
11	20	4	बुध	एका	दिन रात	भरण प्र	9-38 PM	काण्ड:, अधिक दिन, 4-19 रात वृष में चन्द्र, 7-12 प्रात: धनु में बुध।	7:33	5:37
13	21	5	गुरु	एका दि	8-36AM	कृति प्र	12-14 AM	अलापकम्:, पुत्रदा एकादशी।	7:33	5:38
15	22	6	शुक्र	द्वाद दि	10-33AM	रोहि प्र	2-21 AM	मैत्रम्।	7:34	5:39
16	23	7	शनि	त्रयो दि	11-58AM	मृग प्र	3-54 AM	वज्रम्, 3-12 दिन मिथुन में चन्द्र।	7:34	5:40
18	24	8	रवि	चर्तु दि	12-47PM	आर्द्रा प्र	4-53 AM	ध्वांक्ष:।	7:34	5:40
20	25	9	सोम	पूर्णि दि	1-00PM	पुन प्र	5-19 AM	धौम्य : 11-15 रात कर्क में चन्द्र, 1-38 दिन कुम्भ में शुक्र।	7:34	5:41

श्राद्ध :- प्रतिपदा से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

मध्याह्न:- प्रतिपदा से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी व त्रयोदशी पहले दिन, चतुर्दशी व पूर्णिमा अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- मकान बनवाने के बाद हम हवन, गृह प्रवेश पूजा पाठ आदि क्यों करवाते है? गृह प्रवेश के समय यज्ञ, रामायण पाठ या गृह प्रवेश पूजा कराने से अनावश्यक गृह दोष का निवारण हो जाता है और घर में लक्ष्मी का आगमन होता है। समस्त कुप्रभावों को नष्ट करने के लिए ही हम ग्रह प्रवेश पूजा कराते हैं जिससे घर में सदैव सुख शान्ति व खुशहाली रहती हैं। हवन आदि करने से आत्मिक शान्ति मिलती है। और शान्त मन तथा प्रसन्न चित होने से उस समय घर में प्रवेश करो तो सदैव प्रसन्नता कायम रहती है।

माघ कृष्ण पक्ष

१० जनवरी २०१२ की ग्रह स्थिति:-धनु में सूर्य, बुध; कुम्भ में शुक्र; मेष में गुरु; वृष में केतु; सिंह में भौम; तुला में शनि; वृश्चिक में राहु।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2012

मान	पौष	जन	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, शिशर ऋतु / उतरायण।	सू उ	सू अ
25 22	26	10	भौम	प्रति दि	12-40PM	तिष्या प्र	5-15AM	प्रवर्ध:।	7:34	5:42
24	27	11	बुध	द्विती दि	11-52AM	अश्ले प्र	4-48AM	क्षय:, 4-48 रात सिंह में चन्द्र।	7:34	5:43
26	28	12	गुरु	तृती दि	10-40AM	मघा प्र	4-02AM	गज:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9:04 रात)।	7:34	5:44
29	29	13	शुक्र	चतु दि	9-11AM	पू.फा. प्र	3-01AM	सिद्ध:, त्र्यह:, (पंचमी प्र 7:28), मासान्त, लोहड़ी पर्व।	7:33	5:45
31	माघ	14	शनि	षष्ठी प्र	5-36AM	उ.फा.प्र	1-51AM	उन्मूलं, 8-45 प्रात: कन्या में चन्द्र, 12-58 रात मकर में सूर्य।	7:33	5:46
34	2	15	रवि	सप्त प्र	3-38AM	हस्त प्र	12-35AM	मानसम्, शिशर संक्रान्ति, साहिब सप्तमी, स्वामी विवेकानन्द जी जयन्ती।	7:33	5:46
36	3	16	सोम	अष्ट प्र	1-37AM	चित्र प्र	11-14PM	मुद्गरम्, 11-55 दिन तुला में चन्द्र।	7:33	5:47
39	4	17	भौम	नवम प्र	11-33PM	स्वात प्र	9-52PM	ध्वज:।	7:33	5:48

41	5	18	बुध	दश प्र	9-30PM	विशा प्र	8-30 PM	प्रजापत्य:, श्री नीलकण्ठ शर्मा यज्ञ (श्रीनगर), 2-50 दिन वृश्चिक में चन्द्र।	7:32	5:49
44	6	19	गुरु	एका प्र	7-30PM	अनु प्र	7-10 PM	आनन्द: षटतिला एकादशी व्रत, निष्कासन दिवस।	7:32	5:50
47	7	20	शुक्र	द्वाद दि	5-35PM	ज्येष्ठ प्र	5-56 PM	चर:, 5-56 दिन धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ।	7:32	5:51
50	8	21	शनि	त्रयो दि	3-50PM	मूल दि	4-51 PM	मुसुलं, शिव चतुर्दशी,स्वामी राम जी निर्वाण दिवस।	7:32	5:52
53	9	22	रवि	चर्तु दि	2-19PM	पू.षा. दि	4-01 PM	शूलम्, 9-52 रात मकर में चन्द्र।	7:31	5:53
56	10	23	सोम	अमा दि	1-09PM	उ.षा. दि	3-32 PM	मृत्यु:।	7:31	5:54

श्राद्ध :- प्रतिपदा से पंचमी तक पहले दिन, षष्ठी से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी से अमावस्या तक पहले दिन

मध्याह्न:- प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से पंचमी तक पहले दिन, षष्ठी से अमावस्या तक अपने दिन

हमारी संस्कृति के प्रतीक:- <u>हिन्दू स्त्रियाँ माँग में सिन्दूर क्यों लगाती हैं?</u> सीमन्त अर्थात् माँग में सिन्दूर या माथे पर बिंदियाँ लगाना सुहागिन स्त्रियों का सूचक है। माँग में सिन्दूर लगाने का वैज्ञानिक कारण भी है। ब्रह्मरन्ध्र और अध्मि नामक मर्मस्थान के ठीक ऊपर स्त्रियाँ सिन्दूर लगाती हैं जिसे सामान्य भाषा में सीमन्त अथवा माँग कहते हैं। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का यह भाग अपेक्षाकृत कोमल होता है। चूँकि सिन्दूर में पारा जैसी धातु अत्यधिक मात्रा में पायी जाती है जो स्त्रियों के शरीर विद्युतीय को नियंत्रित करता है तथा मर्मस्थल को बाहरी दुष्प्रभावों से बचाता भी है। कुंकुम हल्दी का चूर्ण होता है जिसमें नींबू का रस मिलाने से लाल रंग का हो जाता है। आयुर्वेद के अनुसार कुंकुम त्वचा शोधन के लिए सर्वोतम औषधि है। इसका तिलक लगाने से मस्तिष्क तन्तुओं में क्षीणता नहीं आती।

माघ शुक्ल पक्ष

२४ जनवरी २०१२ की ग्रह स्थिति:- मकर में सूर्य, बुध; कुम्भ में शुक्र; मेष में गुरु; वृष में केतू; सिंह में भौम(व);तुला में शनि;वृश्चिक में राहु। सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2012

मान	माघ	जन	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, शिशर ऋतु / उतरायण।	सू उ	सू अ
26 00	11	24	भौम	प्रति दि	12-26PM	श्रवण दि	3-29 PM	अलापकम्, 3-40 रात कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ, 6-55 प्रात: मकर में बुध।	7:30	5:55
05	12	25	बुध	द्विती दि	12-15PM	धनि दि	3-59 PM	मैत्रम्।	7:30	5:56
08	13	26	गुरु	तृती दि	12-42PM	शत दि	5-05 PM	वज्रम, गौरी तृतीया (सरस्वती पूजा)।	7:29	5:57
10	14	27	शुक्र	चतु दि	1-47PM	पू.भा. प्र	6-48 PM	ध्वाक्ष:, त्रिपुरा चतुर्थी व्रत, 12-19 दिन मीन में चन्द्र।	7:29	5:58
10	15	28	शनि	पंच दि	3-30PM	उ.भा. प्र	9-07 PM	धौम्य:, कुमार षष्ठी, वसन्त पंचमी।	7:28	5:58
15	16	29	रवि	षष्ठी दि	5-45PM	रेव प्र	11-53 PM	प्रवर्ध:, 11-53 रात मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	7:28	5:59
18	17	30	सोम	सप्त प्र	8-19PM	अश्वि प्र	2-55 AM	क्षय:, सूर्य सप्तमी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा।	7:27	6:0
23	18	31	भौम	अष्ट प्र	10-59PM	भरण प्र	5-59 AM	गज:, भीष्म अष्टमी।	7:27	6:1

28	19	फर	बुध	नवम प्र	1-28AM	कृति	दिन रात	सिद्धः, 12-43 दिन वृष में चन्द्र।	7:26	6: 2
31	20	2	गुरु	दश प्र	3-31AM	कृति दि	8-49 AM	अलापकम्।	7:25	6: 3
25	21	3	शुक्र	एका प्र	4-56AM	रोहि दि	11-10 AM	मैत्रम्, भीमसेन काह, जया एकादशी, 12-07 रात मिथुन में चन्द्र, 10-29 दिन मीन में शुक्र, श्रीमती कांता जी माम (जलाली) यज्ञ।	7:25	6: 4
39	22	4	शनि	द्वाद प्र	5-38AM	मृग दि	12-53 PM	वज्रम्।	7:24	6: 5
43	23	5	रवि	त्रयो प्र	5-34AM	आर्द्रा दि	1-54 PM	ध्वाक्षः।	7:23	6: 6
47	24	6	सोम	चर्तु प्र	4-47AM	पुन दि	2-11 PM	धौम्यः, यक्षिणी चुदाह, 8-10 प्रातः कर्क में चन्द्र।	7:22	6: 7
53	25	7	भौम	पूर्णि प्र	3-24AM	तिष्या दि	1-48 PM	प्रवर्धः, काव पुनिम, माघ पुणिमा, गुरु रविदास जी जयन्ती, स्वामी कुमार जी आश्रम यज्ञ पुट्ठी।	7:22	6: 8

श्राद्ध :- प्रतिपदा से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा से पूर्णिमा तक अपने दिन।

हमारी संस्कृति के प्रतीकः- बेल पत्र में तीन दल (पते) होने का क्या अर्थ है?

बेल पत्र के तीन पते (दल) तीन प्रमुख देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का द्योतक है। तीन दल तीन लोकों को बतलाता है। बल पत्र के तीन दल से तीन महादेवियों (महालक्ष्मी, महासरस्वती व महाकाली) का ज्ञान होता है। देश की तीन पवित्र नदियाँ गंगा, यमुना व सरस्वती भी हैं। महादेव शंकर जी के त्रिशूल में तीन फल होते हैं जिसमें तीनों लोकों का संहार करने की शक्ति निहित है। इसी लिये हेरथ (शिवरात्रि) की सामग्री लेते समय हम बेल पत्र को भी प्राथमिकता देते हैं।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

८ फरवरी की ग्रह स्थिति:- मकर में सूर्य, बुध; मीन में शुक्र; मेष में गुरु; वृष में केतू; सिंह में भौम(व);तुला में शनि(व); वृश्चिक में राहु। सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2012

मान	माघ	फर	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, शशिर ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
26 55	26	8	बुध	प्रति प्र	1-31AM	अश्ले दि	12-51 PM	क्षय:, हुरॅं उकदोह, 12-51 दिन सिंह में चन्द्र।	7:21	6: 9
59	27	9	गुरु	द्विती प्र	11-18PM	मघा दि	11-30 AM	गज:।	7:20	6:10
27 03	28	10	शुक्र	तृती प्र	8-53PM	पू.फा. दि	9-53 AM	सिद्ध: 3-27 दिन कन्या में चन्द्र, 12-10 रात कुम्भ में बुध, संकट नि. चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय 9-03 रात)।	7:19	6:11
07	29	11	शनि	चतु प्र	6-24PM	उ.फा.दि	8-07 AM	उन्मूलं।	7:18	6:12
11	30	12	रवि	पंच दि	3-57PM	चित्र प्र	4-42 AM	काम्य: मासान्त, 5-31 शां तुला में चन्द्र।	7:17	6:13
15	फागु	13	सोम	षष्ठी दि	1-39PM	स्वात प्र	3-12 AM	छत्रम्: संक्रान्ति व्रत, 1-58 दिन कुम्भ में सूर्य।	7:16	6:13
20	2	14	भौम	सप्त दि	11-32AM	विशा प्र	1-55 AM	श्रीवत्स: 8-13 रात वृश्चिक में चन्द्र।	7:16	6:14

24	3	15	बुध	अष्ट दि	9-39AM	अनु प्र	12-53 AM	सौम्यः, हुर अठम, चक्रीश्वर यात्रा, अमृतकुण्ड पुखरीबल के.वी. नगर बनतालाव।	7:15	6:1
28	4	16	गुरु	नवम दि	8-01AM	ज्येष्ठ प्र	12-05 AM	कालदण्डः दयार दहम, श्री दामूदर भट्ट (फतेहपुर) जयन्ती, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, त्रयहः (दश प्र 6-38), 12-05 रात धनु **A**	7:14	6:1
33	5	17	शुक्र	एका प्र	5-30AM	मूल प्र	11-32 PM	स्थिरः, विजया एकादशी। **A** में चन्द्र व मूल आरम्भ।	7:13	6:1
37	6	18	शनि	द्वाद प्र	4-38AM	पू.षा. प्र	11-15 PM	मतंगः 5-14 रात मकर में चन्द्र।	7:12	6:1
41	7	19	रवि	त्रयो प्र	4-05AM	उ.षा. प्र	11-16 PM	अमृतम्ः, हेरथ (शिवरात्रि) वटुक नाथ पूजा।	7:11	6:1
46	8	20	सोम	चर्तु प्र	3-52AM	श्रवण प्र	11-36 PM	सिद्धः, शिवचतुर्दशी (महा शिवरात्रि समस्त भारत)।	7:10	6:2
55	9	21	भौम	अमा प्र	4-05AM	धनि प्र	12-20 AM	उन्मूलंः, वटुक परिमोजुन (अपनी रीति अनुसार), डून्यमावस, 11-55 दिन कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	7: 9	6:2

श्राद्ध :- प्रतिपदा से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से दशमी तक पहले दिन, एकादशी से अमावस्या तक अपने दिन।

मध्याह्नः- प्रतिपदा से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी से दशमी तक पहले दिन, एकादशी से अमावस्या तक अपने दिन।

Puja:- In Sanskrit, words are formed with meaning in mind. For instance in the word puja, **'p'** stands for 'paapa' meaning sins. **'j'** stands for 'janma' means birth. With **'p'** it removes all accumulated sins, and with **'j'** it makes your life's (birth) purpose fulfilled. By puja you will be in a position to inject the noblest thoughts in the subconscious. Above all, one will succeed in solving the mystery of 'Life'. **Do the Puja anyway you can, with devotion and love for Lord in your heart.**

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

२२ फरवरी की ग्रह स्थिति:- कुम्भ में सूर्य, बुध; मीन में शुक्र; मेष में गुरु; वृष में केतू; सिंह में भौम(व);तुला में शनि (व); वृश्चिक में राहु।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2012

मान	फागु	फर	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, शिशर/वसन्त ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
28 00	10	22	बुध	प्रति प्र	4-45AM	शत प्र	1-30AM	मानसम्।	7:7	6:21
05	11	23	गुरु	द्विती प्र	5-57AM	पू.भा.प्र	3-10AM	मुद्गरम्, श्री राम कृष्ण परमहन्स जयन्ती, 8-42 रात मीन में चन्द्र।	7:6	6:22
08	12	24	शुक्र	तृती	दिन रात	उ.भा.प्र	5-20AM	ध्वज:, अधिक दिन।	7:5	6:23
13	13	25	शनि	तृती दि	7-39AM	रेव	दिन रात	प्रजापत्य:।	7:4	6:24
18	14	26	रवि	चतु दि	9-51AM	रेव दि	7-57AM	प्रवर्ध:, 7-57 प्रात: मेष में चन्द्र व पंचक समाप्त।	7:3	6:25
23	15	27	सोम	पंच दि	12-23PM	अश्वि दि	10-55AM	क्षय:, कुमार षष्ठी व्रत, 4-04 दिन मीन में बुध।	7:2	6:25
27	16	28	भौम	षष्ठी दि	3-04PM	भरण दि	2-03PM	गज:, 8-50 रात वृष में चन्द्र।	7:1	6:26
30	17	29	बुध	सप्त दि	5-40PM	कृति दि	5-06PM	सिद्ध:, 7-23 प्रात: मेष में शुक्र।	7:0	6:27

33	18	मार्च	गुरु	अष्ट प्र	7-55PM	रोहि प्र	7-50 PM उन्मूलं:, तील अष्टमी	6:58	6:28
38	19	2	शुक्र	नवम प्र	9-34PM	मृग प्र	9-59 PM मानसम्:, 9-00 दिन मिथुन में चन्द्र।	6:57	6:29
43	20	3	शनि	दश प्र	10-28PM	आर्द्रा प्र	11-25 PM मुद्गरम्:, स्वर्गीय दिनानाथ नादिम जयन्ती।	6:56	6:29
45	21	4	रवि	एका प्र	10-30PM	पुन प्र	12-02 AM ध्वज:, अमला एकादशी, 5-57 सायं कर्क में चन्द्र।	6:55	6:30
50	22	5	सोम	द्वाद प्र	9-42PM	तिष्या प्र	11-49 PM प्रजापत्य:।	6:54	6:31
58	23	6	भौम	त्रयो प्र	8-07PM	अश्ले प्र	10-51 PM आनन्द:, 10-51 रात सिंह में चन्द्र।	6:52	6:32
29 00	24	7	बुध	चर्तु दि	5-53PM	मघा प्र	9-15 PM चर:, होलिका दहन।	6:51	6:33
05	25	8	गुरु	पूर्णि दि	3-09PM	पू.फा. प्र	7-12 PM मुसुलं:, होली 12-39 रात कन्या में चन्द्र।	6:50	6:33

श्राद्ध :- प्रतिपदा से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी से सप्तमी तक पहले दिन, अष्टमी से चतुर्दशी तक अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन

मध्याह्न:- प्रतिपदा से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी का पहले दिन, पंचमी से पूर्णिमा तक अपने दिन।

आवश्यक जानकारी:-

- किसी भी मुहूर्त या पर्व के विषय में अगर आप को कोई भी संशय है या कोई जानकारी चाहते हैं तो *विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय, वोहड़ी, जम्मू* या दूरभाष 2555064 (O) या 2552625(R) से सम्पर्क स्थापित करें ।
- दवगोण के लिये मुहूर्त, नक्षत्र, तिथि आदि देखने की कोई आवश्यकता नहीं होती। परन्तु दिवगोण के दिन यदि भौमवार या शनिवार हो तो दिवगोन का आरम्भ सूर्य उदय से पहले ही करें।

चैत्र कृष्ण पक्ष

९ मार्च की ग्रह स्थिति:- कुम्भ में सूर्य; मीन में बुध; मेष में शुक्र, गुरु; वृष में केतू; सिंह में भौम (वक्री); तुला में शनि (वक्री); वृश्चिक में राहु।
सप्तर्षि 5087; विक्रमी 2068; शाक: 1933; ईस्वी 2012

मान	फागु	मार्च	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	ग्रह संचार बजे मिन्टों में, वसन्त ऋतु, उतरायण।	सू उ	सू अ
29 08	26	9	शुक्र	प्रति दि	12-07PM	उ.फा.दि	4-52 PM	शूलम्।	6:49	6:34
13	27	10	शनि	द्विती दि	8-55AM	हस्त दि	2-26 PM	मृत्यु:, त्रयह: (तृती प्र 5-45), 1-13 रात तुला में चन्द्र।	6:47	6:35
18	28	11	रवि	चतु प्र	2-44AM	चित्र दि	12-02 PM	काम्य:, संकट निवारण चतुर्थी व्रत (चन्द्रउदय 10:13 रात)।	6:46	6:36
22	29	12	सोम	पंच प्र	12-00AM	स्वात दि	9-51 AM	छत्रम्:, 2-24 रात वृश्चिक में चन्द्र।	6:45	6:36
27	30	13	भौम	षष्ठी प्र	9-38PM	विशा दि	7-58 AM	श्रीवत्स:, मासान्त, [redacted]	6:43	6:37
32	चैत्र	14	बुध	सप्त प्र	7-43PM	ज्येष्ठ	5-28 AM	ध्वांक्ष:, संक्रान्ति व्रत, [redacted], 5-28 रात धनु में चन्द्र व मूल आरम्भ, 10-50 दिन मीन में सूर्य।	6:42	6:38
36	2	15	गुरु	अष्ट दि	6-15PM	मूल प्र	4-54 AM	धौम्य:।	6:41	6:39
41	3	16	शुक्र	नवम दि	5-15PM	पू.षा. प्र	4-47 AM	प्रवर्ध:।	6:39	6:39

46	4	17	शनि	दश	दि	4-41PM	उ.पा. प्र	5-05 AM	क्षय: 10-49 दिन मकर में चन्द्र।	6:38	6:40
51	5	18	रवि	एका	दि	4-34PM	श्रवण प्र	5-48 AM	मुसुलं:, पापमोचिनी एकादशी।	6:37	6:41
55	6	19	सोम	द्वाद	दि	4-51PM	धनि	दिन रात	शूलम्, 6-18 शां कुम्भ में चन्द्र व पंचक आरम्भ।	6:36	6:41
30 00	7	20	भौम	त्रयो	दि	5-32PM	धनि दि	6-55 AM	उन्मूलं ।	6:34	6:42
05	8	21	बुध	चर्तु	दि	6-38PM	शत दि	8-24 AM	मानसम्, चित्र चुदाह, 3-47 रात मीन में चन्द्र।	6:33	6:43
09	9	22	गुरु	अमा	प्र	8-07PM	पू.भा.दि	10-18 AM	मुद्गरम्, याल मरुण, श्री भट्टजयन्ती, विचार नाग यात्रा।	6:32	6:44

श्राद्ध :- प्रतिपदा से तृतीया तक पहले दिन, चतुर्थी से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी से चतुर्दशी तक पहले दिन, अमावस्या का अपने दिन।
मध्याह्न:- प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया व तृतीया पहले दिन, चतुर्थी से अमावस्या तक अपने दिन।

What is the purpose of Vidhyarambh ceremony?

The word *vidya* means *knowledge* and *arambh* denotes *beginning*. Education of the child is a very important aspect of life and deserves all the importance it can be given. In the **Jyotirnibandh** it is said

विहाया लुप्यते पापं विद्ययाऽयुः प्रवर्धते।
विद्यया सर्वसिद्धिः स्याद्विद्ययामृमश्नुते ॥

With the study of Vedas all sins are eliminated. One lives longer. One succceeds in every thing. The nectar of learning comes just like normal food and water. The religious text explains the one who is not knowledgeable is deprived of wonderful fruit like morality.

संसारे भारतं सारं तत्रापि च हिमालयम्, तत् मध्ये च काश्मीरं तत्रापि च विजयेश्वरम्।।

स्व. ज्यो. आप्ताभ शर्मा
प्रवर्तक विजयेश्वर जन्त्री

स्व. ज्यो. काशीनाथ शर्मा
संस्थापक

।। ओ३म् ।।

COMPUTERISED

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.)

कार्यालय : बोहड़ी पट्टा, चुंगी (समीप मैटाडोर स्टैण्ड)
जम्मू-180002 दूरभाष 0191-2555064